मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है ?

मृत्यु से छुड़ा वही सकता है जो मृत्यु से भी बलवान अर्थात् मृत्युंजय हो। काल से बचा वही सकता है जो 'कालों का भी काल' हो। कर्मों के दण्ड और बन्धन से मुक्त वही कर सकता है, जो कर्मों की गहन गति को जानता हो और देवों का भी देव हो। अत: यह एक बात अच्छी तरह से गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि संसार में अन्यान्य देन अथवा सहायता भले ही कोई मनुष्य दे सकता हो लेकिन मुक्ति और जीवनमुक्ति का दाता एक परमपिता परमात्मा ही है। इसी कारण उन्हें ही मृत्युंजय अथवा अमरनाथ भी कहा जाता है। अन्य किसी को भी ये उपाधियाँ नहीं दी जा सकतीं। भक्तजन परमपिता परमात्मा से ही कहते हैं, 'हे प्राणदाता, हे जहाँपनाह, हे शरणदाता, हमारी रक्षा करो।' 'सुख घनेरे देने वाला', 'कालकण्टक दूर करने वाला' भी केवल परमात्मा को ही कहा जाता है।

परमात्मा द्वारा कौन-सा अमृत मिलता है?

यह बात तो प्रसिद्ध है कि अमृत पीने से ही मनुष्य अमर हो सकता है परन्तु लोग यह नहीं जानते कि वह अमृत कौन-सा है और उस अमृत को देने वाला वैद्य कौन है? आज वैद्यों ने अमृत-धारा बना रखी है। पुजारी लोग देवताओं की मूर्तियों के चरणों पर जल को उछाल कर चरणामृत भी पिलाते हैं परन्तु समझने की बात यह है कि जन्म-मरण में आने वाले मनुष्यों ने प्रकृति के तत्वों से जो यह 'अमृत' बनाये हैं उनसे मनुष्य अमर कैसे हो सकता है? सच्चा अमृत तो अमरनाथ (शिव) पिता परमात्मा का गीता-ज्ञान ही है। जब मनुष्य मरने लगता है तब उसे 'गीता-ज्ञान' सुनाते हैं और अन्य सब दवाइयाँ देना छोड़ देते हैं। वे समझते हैं कि गीता सुनने से मनुष्य स्वर्ग जायेगा परन्तु उस समय मनुष्य गीता-ज्ञान धारण थोड़े ही कर सकता है।

जो मनुष्य गीता-ज्ञान को जीवन में धारण करके, जीवन को पवित्र बनाता है उसके लिए मृत्यु एक पुल है जिस द्वारा वह मृत्युलोक को पार करके अमरलोक में चला जाता है अथवा स्वर्गवासी हो जाता है। परमात्मा स्वयं अवतरित होकर जो गीता-ज्ञान देते हैं वही अमृत है और उसी से मनुष्य स्वर्ग में अमर पद पाता है। पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य के बिना मृत्यु को जीतना ऐसे ही असम्भव है जैसे धरती में तारे उगने की आशा करना। प्रसिद्ध है कि ब्रह्मचर्य से ही देवताओं ने मृत्यु को जीता था। मृत्युलोक में ले जाने वाला काम विकार ही है। अत: ब्रह्मचर्य को धारण करने, ज्ञानामृत पीने और परमपिता परमात्मा का बच्चा बनने से अर्थात् मरजीवा बनने से ही मृत्यु पर विजय प्राप्त हो सकती है, अन्य इसका कोई तरीका नहीं है। जो मनुष्य कालों के काल परमात्मा का हाथ पकड़ता है, उसको काल हाथ लगा जाये, उसकी क्या मजाल है! ❖

अमृत-सूची

- धर्म और धन *(संपादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ..6
- देना ही लेना 8
- एक मिनट - तीन बातें.........10
- उपकार तुम्हारा बाबा 11
- चमत्कार बाबा के ज्ञान 12
- परिस्थिति हमारी खुशी 13
- माँसाहार या शवाहार 15
- एक प्रमाण परमात्मा की 17
- आँख का इलाज किया 18
- ईर्ष्या:मन के लिए धीमा जहर ..19
- जेल में रहते भी...............22
- क्रोध रूपी काँव-काँव 23
- शुभ भावनाओं का शुभ फल..24
- कर्मों की परिभाषा.............25
- अलौकिक जीवन.. *(कविता)* ..26
- श्रद्धांजलि 27
- लेखकों से निवेदन 27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- नर सशक्तिकरण 30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- आवश्यक सूचना 34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com

धर्म और धन

संसार में दो प्रकार की गरीबी है, एक धन की और दूसरी धर्म की अर्थात् मूल्यों की धारणा की। पहली गरीबी की खूब चर्चा होती है पर दूसरी की नहीं। वास्तव में धन की गरीबी का कारण भी धर्म की गरीबी ही है। कई बार ऐसा होता है कि किसी धनाढ्य परिवार में कई प्रकार का भोजन बन चुका है और खाने वालों का इन्तजार हो रहा है। तभी घर के मालिक नशे में झूमते हुए आए या क्रोध से उबलते हुए आए और घर में अपशब्दों या हिंसा का वातावरण फैल गया। बना-बनाया भोजन यूँ ही रखा रहा, सभी भूखे सो गये। गरीब भूखा इसलिए सोता है कि धन नहीं है और ये भूखे इसलिए सो गए क्योंकि धर्म (मूल्य) नहीं है। हम धन तो कारखाने में काम करके, स्कूल में पढ़ा करके, व्यापार करके कमा लेंगे पर धर्म कमाने कहाँ जाएंगे और धर्म के बिना धन का सुख मिलेगा नहीं। ये दोनों साथ-साथ चाहिएँ। इसके लिए एक पाँव यदि धन कमाने की तरफ उठता है तो दूसरा धर्म कमाने की तरफ उठना ही चाहिए। तभी धन का, रिश्तों का, परिवार का सुख मिलेगा। ऐसे नहीं कि पहले धन कमा लूँ, फिर धर्म कमा लूँगा। यदि मूल्यों वाले पाँव को ऊपर बांध लिया (बच्चे खेल में एक पाँव को ऊपर बाँधकर दौड़ते हैं) तो केवल एक पाँव से दौड़ते हुए हाँफ जाएँगे। कितनी आश्चर्य की बात है कि जब हमें बहुत सारी जिम्मेवारियाँ निभानी थीं तब केवल एक पाँव (धन) के सहारे दौड़ लगाते हैं पर जब बुढ़ापे में कई ज़िम्मेवारियाँ (कार्यालय आदि की) कम हो जाती हैं तब उस बँधे पाँव को खोल लेते हैं। होना यह चाहिए था कि अधिक ज़िम्मेवारियों के समय दोनों पाँवों से दौड़ लगाते।

धर्म और धन

हम जानते हैं कि मोटरगाड़ी पेट्रोल से चलती है लेकिन केवल पेट्रोल ही काफी नहीं है, पेट्रोल के साथ पानी भी आवश्यक है। गाड़ी जब गरम हो जाती है, तब उसे ठंडा करने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी के अभाव में गाड़ी जल जाने का भय रहता है। हमारा जीवन भी गाड़ी के समान ही है। इसके लिए धन के पेट्रोल के साथ धर्म के पानी की भी आवश्यकता होती है। केवल धन के पेट्रोल से जीवन की गाड़ी को चलाये रखा तो तृष्णा की आग इसे जलाकर खाक कर देगी। जीवन में कलह और तृष्णा की तथा असंतोष और लोभ की आग लग जायेगी। धर्म को भूलकर केवल धनार्जन में ही सन्तुष्ट रहते हुए जीवनयापन करते रहे तो धन रूपी पेट्रोल, जीवन की गाड़ी को जलाकर भस्म कर देगा। धर्म का जल साथ में होगा तो गाड़ी सुलगेगी नहीं और ठीक ढंग से चलेगी। धन के साथ धर्म का भी ख्याल रखा गया तो जीवन सुख-शान्ति और सन्तोषपूर्ण रहेगा।

भगवान कहते हैं, ''ज्ञान धन तो है लेकिन स्थूल धन का भी महत्व है। धन के भाग्य का अर्थ है कि जितना खाने-पीने, आराम से रहने के लिए आवश्यकता है, उतना आराम से मिलेगा। कभी कमी या खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। धन के भाग्यवान कभी अपने नाम की या शान की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। आवश्यकता और इच्छा में रात-दिन का अन्तर है। सच्ची आवश्यकता है और सच्चा मन है तो कार्य तो सफल होगा ही, साथ ही धन बचेगा।''

उत्पाद बन बैठे मालिक

वस्तुओं, पदार्थों के निर्माण के कारखाने अधिकतर गाँव-शहर से बाहर बनाए जाते हैं परन्तु मानव का निर्माण समाज के बीच में होता है इसलिए मूल्य आधारित वातावरण

समाज के बीच में चाहिए। यदि एक पंखा या एक स्कूटर या एक गाड़ी बिगड़ जाए तो देश का कुछ हजार या कुछ लाख रुपयों का नुकसान होगा परन्तु यदि केवल एक ही मानव बिगड़ जाए तो कितना नुकसान! न मापने योग्य नुकसान। एक ही आतंकवादी, एक ही उग्रवादी, एक ही हिंसक, एक ही स्मगलर, एक ही मिलावट करने वाला, एक ही जेबकतरा, एक ही व्यसनी – लाखों-करोड़ों का चैन छीन लेता है। आज हमारे भौतिक उत्पाद, साधन और सुविधाओं के उत्पाद तो दिन-प्रतिदिन बढ़िया होते जा रहे हैं और हम आत्मबल, नैतिक बल के नाम पर दिवालिए होते जा रहे हैं इसी कारण जिन्हें हमारा सेवक बनकर सेवा करनी थी, वे हमारे उत्पाद, मालिक बनकर हमें चला रहे हैं। हमारे ना होने पर उनका कुछ नहीं बिगड़ता पर उनके ना होने पर हमारा चैन चला जाता है, यही तो गुलामी है। मानव के भीतर मूल्यों का निर्माण होने से इस गुलामी से बचा जा सकता है।

अपराध के बीज हैं मन में

बाहर के जगत को संवारने अर्थात् अपराधमुक्त, व्यसनमुक्त, हिंसामुक्त बनाने के लिए मानव के भीतर के जगत को संवारना पड़े। थोड़े दिन पहले एक खबर आई थी कि कुछ लोगों ने जमीन के नीचे से सुरंग खोदकर एक बैंक के लोकर्स तोड़ लिए और उनमें रखा सामान चुरा लिया। खबर आने से कई दिनों पहले से इसकी योजना मन में बनी। इस अपराध का बीज तो मन में था। किसी भी चीज को खत्म करने के लिए बीज को ही खत्म करना होता है। यदि हमने सुरंग खोदने और चोरी करने वाले चार-छह लोगों को पकड़कर जेल में डाल भी दिया तो थोड़ा डर तो उनमें बैठेगा परन्तु फिर भी अपराध करके रोज जेल में जाते हुओं को देखकर भी अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं। अवश्य ही शरीर को जेल में डालने के साथ-साथ इन मन से भटके हुओं के मन को परमात्मा से, मूल्यों से जोड़ना पड़ेगा। जब तक मानव मन में मूल्य न डाले जाएँ तब तक अपराध के इन बीजों को नष्ट नहीं किया जा सकेगा। हमें इस विचारधारा को अपनाना पड़ेगा कि सच्ची मौज मूल्यों के साथ जीने में है। इन्हें छोड़कर जो मौज-मस्ती की जाती है वह जीवन को मुरझा देती है।

स्वच्छता ले जाती है ईश्वर के करीब

आज समाज में जितनी भी समस्याएँ हैं उनका कारण है कि हमने भौतिकता को बहुत अधिक महत्व दे रखा है। कन्या भ्रूण-हत्या के पीछे भी यही सोच है कि लड़का धन लेकर आएगा और कन्या को धन देना पड़ेगा। बेरोजगारी का एक कारण सहज धन-प्राप्ति की कामना है, मेहनत से कमाने की इच्छा खत्म हो रही है। बीमारियों का एक कारण यह है कि हम देर से उठते हैं और सुबह की हवा, जो दवा का काम करती है, उसे नहीं ले पाते हैं। बढ़ती गन्दगी का कारण भी हमारे में स्वच्छता नाम के मूल्य की कमी है। एक बार रेलवे विभाग ने, रेल के डिब्बे में एक पर्चा चिपकाया, 'कृपया गन्दगी न फैलाएँ।' नौजवानों का एक झुण्ड उस डिब्बे में चढ़ा, एक ने पर्चे में लिखा हुआ 'न' मिटा दिया। तब बाकियों ने उसकी पीठ ऐसे थपथपाई जैसे उसने कोई बड़ा करिश्मा कर दिखाया हो। अपनी पढ़ने-लिखने की योग्यता को अच्छी बातें मिटाने में लगाकर हम सस्ते रास्ते से समाज के नायक बनने का भ्रम पाल रहे हैं। हाथ की शक्ति को 'न' मिटाने में न लगाकर जब हम गन्दगी मिटाने में लगाएंगे तब देश और समाज का रूप निखरेगा। कहते हैं, स्वच्छता ईश्वर से दूसरे नम्बर पर है। हम स्वच्छता के करीब पहुँचेंगे तो ईश्वर के करीब भी पहुँच जाएंगे।

भीतर पूर्ण विराम लगाना सीखें

हम बर्तन अपने ही घर के मांजते हैं, दूसरे के घर के नहीं। हम वस्त्र भी अपने ही साफ करते हैं, दूसरों के नहीं। इस बात से हम इतनी तो प्रेरणा ले ही सकते हैं कि मन भी हमें अपना ही साफ करना है, दूसरों का नहीं। हम आँख जैसे न बनें जो सारी दुनिया को देख लेती है पर अपने में गिरे छोटे-से कंकर या तिनके को भी नहीं देख पाती। हम अपने मन के मैल को देखें और साफ कर लें तो बाहरी स्वच्छता तो अपने आप साकार हो जाएगी। आध्यात्मिकता हमारी अन्तर्दृष्टि को विकसित करती है। जैसे हम कागज पर पूर्ण विराम लगाने में कुशल हैं इसी प्रकार भीतर चलने वाली नकारात्मक बातों पर भी पूर्ण विराम लगाने में कुशल हो जाएँ तो बाहरी जगत नकारात्मकता से स्वत: मुक्त हो जाएगा।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

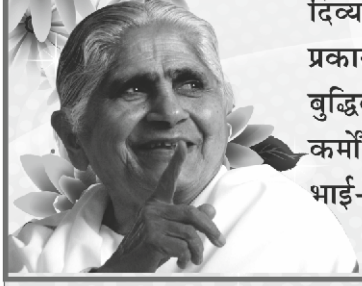

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- कौन-सी तीन बातें सदा ही ध्यान पर रहनी चाहिएँ?

उत्तरः- मेरे मीठे बाबा, प्यारे बाबा हर बात बड़ी सहज करके देते हैं। बाबा कहते हैं, बच्चे, मनमनाभव फिर मध्याजीभव। सतयुग में जाना है पर उससे पहले परमधाम, निर्वाणधाम, शान्तिधाम में जाने की तैयारी करनी है। निमित्त मात्र यहाँ हैं बाकी समय बुद्धिबल से परमधाम में रहना है। बाबा ने हमको फ्री कर दिया है, दु:ख-सुख, निन्दा-स्तुति, हार-जीत हम क्या जानें! इनसे फ्री हैं। अभी तक भी नीचे-ऊपर होना, यह अच्छा नहीं है। सतयुग में आने के पुरुषार्थियो, अन्न की अच्छी सम्भाल करो क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन। इसमें विधिपूर्वक भोग लगाकर खाने से मन शुद्ध बनता है। जिन आत्माओं ने यज्ञ-सेवा में अंगुली दी है, उनको बाबा स्वत: देता है क्योंकि यज्ञ-सेवा अभी संगमयुग पर बहुत महत्व रखती है। जो भी कमी, कमजोरी है, वह भी यज्ञ में स्वाहा कर दो। आज ही उस ग्रहचारी से मुक्त हो जाओ। दे दान तो छूटे ग्रहण। कोई भी ग्रहचारी, जो आगे बढ़ने नहीं देती है या रुकावट डालती है, उसको आने नहीं दो। हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, नियत साफ तो मुराद हासिल, अगर ये तीन बातें जीवन में नेचुरल हैं तो बहुत अच्छा है। संगम पर दिल की सच्चाई से जो व्यवहार है, सम्बन्ध है, बड़ा वैल्युबल है। व्यवहार में थोड़ी भी हेराफेरी करना माना बाबा से दूर होना। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के मुख से ऐसी-ऐसी बातें सुनाई हैं जिन्हें सुनने के बाद और कोई बात सुनने को मन ही नहीं करता है। दिन-रात संकल्पों, स्वप्नों में प्यारा बाबा है।

प्रश्नः- दादी जी, साइलेन्स से शक्ति कैसे मिलती है?

उत्तरः- साइलेन्स में रहना माना मुख से कुछ नहीं बोलना। परमात्मा मेरा पिता है, माता है, शिक्षक है, सखा है, सतगुरु भी है। मैं जो बोलेंगी, अपने अनुभव से बोलेंगी। पहले मैं भगवान को ढूँढ़ती थी, भगवान कहाँ है, कैसा है? भगवान को जानने की बहुत लगन थी। समय आया, परमात्मा बाप से कनेक्शन हुआ। उन्होंने कहा है, पहले अपने को आत्मा समझो। आत्मा समझने से बॉडी कॉन्सेस की नेचर चेंज हो जाती है। शान्त रहने से शक्ति मिलती है और शक्ति शान्ति देती है। सत्य ज्ञान मिला कि परमात्मा निराकार है, परमधाम, निर्वाणधाम में रहने वाला है जहाँ वाणी नहीं है। परमात्मा अपना परिचय देता है, ब्रह्माबाबा के द्वारा। याद में रहने से परमात्मा बाप के सिवाय और कोई बात याद नहीं आती है। कल क्या हुआ था, वह भी मुझे याद नहीं है। सुबह को क्या हुआ, याद नहीं है। बीती को चितवो नहीं, आगे की न रखो आश। तो देखो परमात्मा की शक्ति। वो सर्वशक्तिवान मेरा बाप है। हर एक अपने दिल से पूछे, वो कहाँ रहता है! ब्रह्मा बाबा के तन में अचानक प्रवेश हुआ, इतनी रोशनी मिली जो आत्मा समझना इज़ी हो गया। गीता में पढ़ते थे कि भगवान कहता है, मेरे को याद करो, तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। अब याद करना नहीं पड़ता है परन्तु उसकी शक्ति खींच लो तो वो काम करती है। मैं कोई

देह नहीं हूँ। देह को चलाने वाली मैं आत्मा हूँ, यह सुनने से प्रैक्टिस होती है। देह, देह के सम्बन्धी यहाँ हैं, मैं तो वहाँ (ऊपर) हूँ क्योंकि परमात्मा बाप ऊपर रहता है। तो मेरा घर भी वहाँ ही है ना। तो अपना बुद्धियोग ऊपर बाप में लगाओ तो नीचे से न्यारे और प्यारे बन जाते हैं। ये संबंधी मेरे नहीं हैं, ये देह के हैं। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा, तो बुद्धियोग वहाँ चला जाता है, यह योग है। फिर दिल कहता है, और योग की गहराई में जाऊँ। उसमें एकांत के साथ अन्तर्मुखता की गहराई में जाओ।

प्रश्नः- सच की राह पर चलने वालों की निशानी सुनाइये?

उत्तरः- दुनिया में भी, जो बहुतकाल से सच की राह पर चलते हैं, बहुत शक्तिशाली रहते हैं। हमारे पास सच इतना है जो हमारा तो झूठ खत्म हो ही गया, साथ-साथ दुनिया का झूठ भी खत्म हो जाए। मैं जिन्दा हूँ ही इन्हीं सब वजह से। जो बाबा ने सुख-शान्ति दिए हैं वो सबको मिलें, इस संकल्प से वायब्रेशन देती रहती हूँ। भले अभी सेवा में पहले जैसी भागदौड़ नहीं होती। आयु के हिसाब से सम्भलकर खाना-खिलाना, चलना-फिरना होता है, इससे भी बाबा जो सेवा कराते हैं वन्डरफुल। इस शरीर से न्यारी होने पर बाबा का प्यार ऑटोमेटिक मिलता है। मैं पूछती हूँ, बाबा इस शरीर में मुझे क्यों बिठाया है? एक दिन बाबा से रूहरूहान की तो बाबा ने कहा, बच्ची, कई आत्माओं ने साकार बाबा को नहीं देखा है, उनको साकार बाबा की भासना मिले। हम प्यार के सागर के बच्चे हैं, अनुभव पाया है। हर आत्मा का पार्ट अपना है, ड्रामा की नॉलेज बताती है। साक्षी होकर के प्ले करो तो भगवान मेरा साथी है। मैं हूँ साक्षी, मुझे यह बात बहुत जँचती है और आपको कहती हूँ, कभी न नाराज होना, न किसी को नाराज करना। कोई अवगुण मेरे में न हो, न मुझे किसी का अवगुण दिखाई पड़े। अगर मैंने किसी का अवगुण देखा तो उसका गुण मुझे दिखाई नहीं पड़ेगा। ज्ञान का मनन-चिंतन है तो फिर कोई भी फालतू बात अन्दर नहीं जाती, जो मेरा कांध नीचे हो जाए। तो चेक करो, ज्ञान, योग, धारणा में अन्तर्मुखता, एकाग्रता है? बाहरमुखता नहीं, बाहर की बात सुनने के लिए कान नहीं हैं। जो चीज़ें काम की नहीं हैं उनको देखने के लिए ये आँखें नहीं हैं। अन्दर से जितने साफ हैं उतना अच्छा दिखाई पड़ेगा, यह है सच्ची सेवा।

प्रश्नः- दिल से 'वाह रे वाह!' कब निकलता है?

उत्तरः- बाबा ने हमारे लिये फरिश्तों की दुनिया बनाके रखी है। बाबा कहते हैं, बच्चे, तुम वहाँ ही रहो। जब ऐसा कुछ नीचे देखो ना, तो चले जाओ ऊपर। यहाँ नीचे कहाँ रहेंगे क्योंकि अब धरती पर पाँव रखने का समय नहीं है। ज्ञान में आने से जीवन में बड़ी रॉयल्टी और रियल्टी आ गयी है। दुनिया को साक्षी हो करके देखने की बाबा ने अभी ट्रेनिंग दी है। बाबा कहते, मैं तुम्हारे साथ हूँ। बाबा मेरा साथी है, यह बहुत अच्छा अनुभव है। जो आज्ञा मिले, जी बाबा, हाँ बाबा, कहते और करते चलो, तो इज़ी राजयोग है, मेहनत नहीं है। बाबा को भी हमारे ऊपर बहुत प्यार है और हमको भी बहुत प्यार है। आपस में साथ रहते भी न्यारे रहो तो एक-दो से प्यार मिलेगा। न्यारे हैं तो प्यारे हैं ना। सभी आपस में एक-दो को प्यार से देखते, प्यार करो, तो सभी के दिल से 'वाह रे वाह!' निकलता है। ज्ञान हमें योगयुक्त बनाता है, धारणा पर ध्यान खिंचवाता है फिर उसमें सेवा समाई पड़ी है। सेवा में ऐसे नहीं बिजी हो जाओ, जो पुरुषार्थ में अलबेले या सुस्त हो जाओ। सेवा भाग्य है। बाबा ने बहुत अच्छा सेवा का चांस दिया है। दुनिया के हर कोने में कैसे बाबा सेवा करा रहा है! सेवा क्या है? हे आत्मा तुम कौन हो, किसकी हो और क्या कर रही हो? बस। सहज है। हमारी नेचर ऑर्डिनरी मनुष्यों जैसी नहीं है क्योंकि दिल और दिमाग में है कि वैकुण्ठ में जाने से पहले परमधाम में जाना है। ❖

कोई भी चमत्कार चरित्र का स्थान नहीं ले सकता।
उज्ज्वल चरित्र ही सबसे बड़ा चमत्कार है।

देना ही लेना

ब्रह्माकुमारी गीता बहन, शान्तिवन (आबू रोड)

अध्यात्म जगत में जो व्यक्ति प्रवेश करना चाहे या आगे बढ़ना चाहे उसे परम के साथ सम्बन्ध बढ़ाना पड़े, दृढ़ करना पड़े। परमशक्ति, परमसत्ता ही आध्यात्मिकता का अनादि स्रोत है। व्यक्ति की शक्तियाँ सीमित हैं तो उसकी सिद्धियाँ भी सीमित हैं। जब हम परमसत्ता से जुड़ते हैं तो बेहद-विशाल बन जाते हैं, जैसे झरना नदी से मिलकर और नदी समुद्र में समाकर विशाल बन जाती है। जब हम स्वयं परम के बन जाते हैं तो हम सिर्फ स्वयं के न रहकर विश्व के हो जाते हैं और हमारा जो कुछ है वह भी मानवसेवा के लिए सफल होने लगता है।

दुनिया से जो लिया वह यहीं छोड़ना है

आवश्यकता है अपने पास जो कुछ भी है उस पर से अपना शिकंजा ढीला करने की। सबके हित में समर्पण कर जीवन जीना – यह अध्यात्म जगत की एक प्रकार से प्राथमिक समझ है। जब हम ही परमसत्ता के हैं तो हमारा जो कुछ भी है वह परमसत्ता का ही हुआ! वैसे भी जब हम जन्म लेते हैं तब कुछ भी तो लेकर नहीं आते हैं। तब तो हम कहते हैं कि खाली हाथ आये, खाली हाथ जाना है। जो इस दुनिया से लिया, वह तो यहाँ ही छोड़कर जाना है। साथ ले जाने की कितनी भी तीव्र इच्छा हो तो भी यहाँ का सब यहाँ ही धरा रह जाता है। बाकी जन्म से लेकर मृत्यु के बीच की जीवन-यात्रा में जो कुछ मिलता है उसके हम ट्रस्टी बन सकते हैं, साक्षी बन सकते हैं और अनासक्त भाव से उसका सदुपयोग कर सकते हैं, मालिक नहीं बन सकते। उस पर मालिकी भाव रखकर जीना एक प्रकार से अज्ञानता है।

जो भी अच्छाइयाँ हैं उन्हें बाँटें

अगर इतनी बात समझ में आ जाये तो हम इकट्ठा करने की बजाय देने की इच्छा करने लगेंगे, हमारा दाता का

स्वभाव बनने लगेगा। जहाँ योग्य लगे, जहाँ अति आवश्यक हो वहाँ धन का उपयोग करने की समझ और शक्ति तो व्यक्ति में होनी ही चाहिए। धन है तो धन दें। इसका अर्थ धन-संपत्ति की फिजूलखर्ची या उसके प्रति गैरजिम्मेवार बन जाने की बात नहीं है मगर देने की इच्छा, दया का भाव धर्म का लक्षण है परंतु जब कभी देने की बात निकलती है, तो तुरंत ही मन में धन का विचार आता है क्योंकि दान के साथ हमने धन को जोड़ दिया है। धन न हो तो भी बहुत कुछ दिया जा सकता है। हम निर्मल, निःस्वार्थ प्यार दे सकते हैं, हिम्मत और उमंग-उत्साह भर सकते हैं, आशा, विश्वास और शुभभावना-शुभकामना जगा सकते हैं, भरोसा दे सकते हैं। दिल की दुआयें, परमात्म-स्मृति की शक्तिशाली तरंगों का सहयोग दे सकते हैं। हम रूहानियत भरी नजर से देख सकते हैं। विवेकपूर्ण सुवचनों से अपनी समझ को अनेकानेक लोगों तक पहुँचा सकते हैं। हम सेवा की कोई बड़ी योजना न बना सकते हों लेकिन जो लोग शुभ कार्य करते हैं उनका उचित शब्दों में हौसला बढ़ायें, उनकी पीठ थपथपायें, उनको सहयोग दें – ऐसा भी तो कर सकते हैं। सुनते हैं, दूर-सुदूर गांवों की साधारण, अनपढ़ महिलाएँ किसी एक अच्छी बात को लेकर कार्य

करने लगती हैं तो धीरे-धीरे समाज सुधार का सुंदर कार्य हो जाता है और मदद करने वाले अनेकानेक हाथ भी साथ हो जाते हैं। वर्तमान समय में कई शुद्ध प्रेम के भूखे हैं, शान्ति के प्यासे हैं। अभावग्रस्त, जरूरतमंद व्यक्ति के साथ अगर हम प्यार से बात करें, उसकी व्यथा सुनें, सहानुभूति का हाथ पीठ पर घुमायें तो भी हमारी उपयोगिता सिद्ध होती है। हमदर्दी दिखाने से भी व्यक्ति में आशा और बल का संचार हो सकता है। तभी तो कहते हैं – Sympathy is the best pathy. उंगली निर्देशन से भी पुण्य कमा सकते हैं। इस प्रकार जीवन में स्थूल, सूक्ष्म जो कुछ मिला है, हमारे में जो भी अच्छाइयाँ, महानताएँ हैं उन्हें हम बांटें। अनुभव कहता है, इससे हम स्वयं भी उस विशेषता में पूर्ण और परिपक्व बनते जायेंगे और अन्य सर्व भी लाभान्वित होंगे। इसमें पैसे खर्च हो जाने की, पैसे कम होने की, पैसे न होने की तो बात ही नहीं है।

देने से बढ़ता है

सत्यता तो ये है कि देने से तो और ही बढ़ता है। देना ही लेना हो जाता है। अपने चारों ओर के प्रकृति जगत को ही देख लें, सभी तत्व हमें देते हैं। नदी सदा बहती रहती है। अगर नदी का पानी रुक जाये, किसी गड्ढे में बंद हो जाये तो वह बदबू मारने लगेगा। कुएँ से, बोरिंग से जितना पानी निकालते हैं उतना अंदर से नया पानी आता रहता है। जीवन भी नदी जैसा ही है। अगर अपने चैतन्य आत्म-स्वरूप से प्रेम, सद्भावना का झरना बहता रहेगा तो जीवन भी तरोताजा रहेगा, स्वयं में भरपूरता का अनुभव होगा।

बाँटने से मिलती है खुशी

हम हरेक मनुष्यात्मा आखिर तो सर्व गुणों के सागर, सर्व शक्तियों के अखुट भण्डार, सम्पूर्ण सत्य ज्ञान के दाता परमात्मा के बच्चे हैं। स्वाभाविक रूप से हर आत्मा में कोई न कोई विशेषता, गुण, शक्ति, कला, समझ, योग्यता होती ही है। अगर हम उसे बांटेंगे तो हमें ही खुशी, आत्मसंतोष अनुभव होगा। अंतर्मन में परमात्मा पिता का धन्यवाद करते हुए, अहोभाव की अनुभूति के साथ, स्वयं को निमित्त मात्र समझते हुए जब हम देते जाते हैं तो हमारा भण्डारा स्वत: भरता जाता है। कुदरत ने अगर हमें आवाज अच्छी दी है तो कभी मधुर गान कर दें, सुंदर नृत्यकला है तो प्रसंगानुसार नृत्य कर मनोरंजन कर दें, कोई वाद्य बजाना आता है तो उसका वादन कर, वातावरण को सरस बना दें। काव्य कला हो तो सुंदर कविताओं की रचना कर अनेकों को भावविभोर कर दें। अगर व्यवस्थापन की, संचालन की, वक्तव्य की, स्वादिष्ट सात्विक भोजन बनाने की, शृंगार करने की – जो कोई भी कला, विशेषता हो तो उसे ईश्वरीय उपहार समझ खुले दिल से, नि:स्वार्थ भाव से मानव सेवा में प्रयुक्त करें।

कृपणता निंदनीय है

हर बात में आर्थिक लाभ की बात न सोचकर, मानव समाज के प्रति कर्त्तव्य और ऋण अदा करने की भावना से हम सेवा-सहयोग करते हैं तो भोगने से भी ज्यादा बांटने में आनंद का अनुभव होता है। भारत देश की संस्कृति शुरू से ही सिखाती है – तेन त्यक्तेन भुंजिथा:। मनहूसता, कृपणता तो निंदनीय है। परमात्म देन व कुदरत के खजानों पर तो सबका अधिकार है। हम अपने आपको परिग्रह-संग्रहवृत्ति से मुक्त कर दें और देवी-देवताओं, धर्मात्माओं, महात्माओं, पुण्यात्माओं जैसा देने वाला वरदानी बना लें तो अनेकों की अभाव पीड़ित स्थिति को समाप्त कर सकते हैं। हम यह कह सकते हैं कि देने की वृत्ति-प्रवृत्ति ही अध्यात्म की निशानी है।

हमने खुद हमारी पूर्व मुख्य प्रशासिका परम आदरणीया राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को देखा है। ज्ञानसरोवर के प्रारंभ काल में जब कभी वे आते थे, प्रात: क्लास कराने के बाद हार्मनी हॉल से रिसेप्शन सेन्टर तक सैर करते हुए जाते थे और दोनों तरफ के बगीचे को, पेड़-पौधों को, वृक्ष-लताओं को बड़े प्यार से निहारते थे, हाथ से मातृवत् स्पर्श करते थे और ऐसा स्नेहसिक्त भाव उनके चेहरे से प्रदर्शित

होता था जैसे कि वे प्यार से स्वजन की तरह उनसे बातचीत कर रही हों। ये भी प्रकृति के प्रति अहोभाव व्यक्त करना है।

निमित्त भाव से किया दान ही धर्म है

महात्मा गांधी जी कहते थे कि कोई आपसे रूठ जाये तो उसे मनाने जाना, ऐसा करने में आप कोई उपकार नहीं कर रहे हैं मगर अपना ऋण चुका रहे हैं। एक भक्त कवि की बात पढ़ी थी कि जब वे दान करते थे तो आँखें नीची कर लेते थे। उनसे पूछा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं तो उन्होंने बड़ा प्रेरणादायक जवाब दिया कि देने वाला तो ऊपर वाला है, मैं तो देने के लिए निमित्त मात्र हूँ। ऊँची आँखें करके देने से कहीं वे मुझे देने वाला ना समझ लें इसलिए आँखें झुकाकर देता हूँ। दानवीर जगडूशा (कच्छ-गुजरात) की भी बात पढ़ी है कि वे अपने घर में खिड़की के पास बैठते थे। खुली खिड़की में पर्दा लगा कर रखते थे। बाहर से लेने वाला खिड़की के अंदर हाथ लम्बा करता था और वे पर्दे के पीछे से दान करते थे। ये है देने की रीति। जरा भी देने का अहम् नहीं। ऐसा गुप्त दान, निमित्त भाव से किया दान, धर्म कहा जा सकता है। जो दान, अहंकार की वृद्धि करे वो तो अधार्मिकता है। खुद के लिए तो वह अभिशाप हो जाता है।

नित्य ईश्वरीय महावाक्यों में हम ये ही पढ़ते हैं कि जब भी कुछ दें, तो संकल्प में न आवे कि हम दे रहे हैं। जब निर्संकल्प होकर एक धक से, आवश्यकता के समय पर अपना थोड़ा-बहुत भी सहयोग देते हैं तो जीवन के अंत तक दाता परमात्मा का साथ-सहयोग प्राप्त करने के लिए सुपात्र बन जाते हैं। सचमुच इस विधि से देना ही लेना हो जाता है। ❖

एक मिनट – तीन बातें

डॉ. प्रमेन्द्र देशवाल, प्रधान सम्पादक 'आर्यपुत्र', रुड़की (उत्तराखंड)

संत-समागम में बड़ी संख्या में विद्वान वक्ता मंचासीन थे। प्रथम वक्ता शुरू हुये तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। घंटे भर बोले, सार था आलोचना... आलोचना...सिर्फ आलोचना। संचालक की एक पंक्ति 'दुनिया में सबसे आसान कार्य है परनिंदा' एक घंटे के भाषण पर भारी पड़ी। घोषणा की गयी, समयाभाव है, कृपया अपनी बात दो मिनट में ही रखें। अगले वक्ता आये, बोले, समय दो मिनट है, मैं अपनी बात एक मिनट में ही पूरी करूँगा। युवाओं की संख्या काफी है। हमको जीवन में तीन इन्द्रियों को पवित्र रखना है। प्रथम 'आँख'। इससे काम भावना प्रज्वलित होती है। यदि इस पर अंकुश ना हो तो यह अर्थ का अनर्थ करने में माहिर है। इससे सदैव शुद्ध भावना से देखें, इसकी पवित्रता आवश्यक है।

द्वितीय हैं 'कान'। इनसे हमारे अंदर अभिमान जागृत होता है। यदि किसी ने बताया कि वो तुम्हारे बारे में यह बोल रहा था तो तुरन्त मन में आता है, अच्छा, उसकी यह मजाल! इससे बचाव के लिए एक नियम बना लें। जो अच्छी और सही बात लगे, ग्रहण करें अन्यथा इधर से सुनें, उधर से बाहर। इन पर नियंत्रण रखें।

तृतीय है 'जीभ'। यह बहुत ही खतरनाक, चालाक और लचीली है। स्वयं तो 32 दाँतों रूपी सैनिकों के संरक्षण में सुरक्षित रहती है, पिटता बेचारा सिर है। इस पर काबू जरूरी है। पहले तोलो, फिर बोलो या तो चुप रहो या ऐसा बोलो जो चुप से बेहतर है। इसको जिसने जीत लिया, समझो जग जीत लिया। इतना कहकर वे मंच से चले गये। तालियाँ थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। ❖

उपकार तुम्हारा बाबा

ब्रह्माकुमारी सीवन चीमा,
यू.एस.ए.

मैं कोटों में कोई और कोई में से कोई भाग्यवान आत्मा हूँ जिसे भगवान ने टी.वी.द्वारा चुना। मेरे युगल ने टी.वी.चैनल बदलते-बदलते शिवानी बहन का प्रवचन सुना, बहुत अच्छा लगा। उन्होंने मुझे कहा, बहुत अच्छा प्रवचन है, आप भी देखना। मैंने मना कर दिया। मैं भक्ति मार्ग पर चल रही थी और अपने को भगवान के काफी करीब महसूस करती थी हालांकि यह मालूम नहीं था कि भगवान कहाँ रहता है, नाम क्या है इत्यादि। सिक्ख धर्म में भी परमात्मा को निराकार मानते हैं। रोज अमृतवेले उठ कर, स्नान करके नियम से ज्योत जगाती, तब मेरी बुद्धि ऊपर की तरफ जाती और मैं कहती, भगवान, आपको मैं महसूस करती हूँ, आप कहीं न कहीं हो पर दिखाई नहीं देते हो।

खोज समाप्त हो गई

एक दिन युगल ने बहन शिवानी का प्रवचन रिकॉर्ड किया और बोले, कल सुबह इकट्ठे चाय पीयेंगे और साथ-साथ प्रवचन सुनेंगे। बस, उस दिन के बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जैसे-जैसे शिवानी बहन का प्रवचन टी.वी.पर देखती, सुनती गई, ज्ञान इतना अच्छा लगा, इतना ठीक लगा कि पक्का निश्चय हो गया कि भगवान के सिवाय यह ज्ञान किसी और का हो ही नहीं सकता और ऐसे लगा जैसे कोई भूली हुई बात याद आ गई हो। मुझे वो दिन कभी नहीं भूलता जिस दिन प्रवचन के आखिर में कनुप्रिया बहन ने बोला, भगवान इस धरती पर आ चुके हैं, वे कहाँ हैं, कैसे हैं, उनका नाम क्या है, यह जानने के लिए कल देखें.....। सारी रात मुझे नींद नहीं आई। क्या भगवान सचमुच आ गए हैं? दूसरे दिन जल्दी-जल्दी टी.वी.के सामने बैठी, यह देखने के लिए कि भगवान कैसे हैं? कौन हैं? वाह मेरा भाग्य वाह!!! जब जाना कि भगवान ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं, परमधाम को देखा और जाना कि भगवान परमधाम के रहवासी हैं तो सारी खोज समाप्त हो गई। सात दिन का कोर्स भी शिवानी बहन के इस प्रवचन द्वारा ही हो गया। ऐसे लगा कि सारी बातें मेरी स्मृति में आ गई हैं। कोई भी संशय नहीं हुआ।

एक-एक बात मन में उतर गई

मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि भगवान निराकार हैं और वे साकार तन का आधार लेकर अपना कार्य कर रहे हैं। जिस साकार तन को वे चुनते हैं उसका भी कारण है। एक-एक बात मन में उतर गई। इसी दौरान राजयोग भी टी.वी.के द्वारा सीख लिया। मेरे संस्कार बहुत तेजी से परिवर्तन होने लगे। एक अजीब खुशी का अनुभव हुआ। फिर मैंने सोचा कि अगर टी.वी.पर देखकर इतना परिवर्तन हो गया है तो ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर भी जरूर जाना चाहिए। जब मैंने इन्टरनेट पर खोज की तो पता चला कि Nevada (USA) में कोई सेवाकन्द्र नहीं है। सबसे नजदीकी सेवाकेन्द्र कैलिफोर्निया-सैक्रामेन्टो में है। उन्हीं दिनों मेरा भारत में पंजाब राज्य में जाना हुआ। वहाँ पता चला कि सेवाकेन्द्र, मेरे माता-पिता के घर रायकोट (लुधियाना) से पाँच मिनट की दूरी पर है। ज्ञान तो बाबा ने टी.वी.द्वारा ही दे दिया था। कोई सवाल नहीं था पर मुरली नहीं मिल रही थी। सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन ने कहा, पहले सात दिन का कोर्स करो, उसके बाद ही मुरली मिलेगी। इस प्रकार दुबारा सात दिन का कोर्स किया। जितने दिन पंजाब में थी, रोज सेवाकेन्द्र पर जाकर मुरली सुनती। हर सवाल का जवाब मुरली में मिल जाता था। यू.एस.ए.वापिस आने के समय बहन को कहा, आपके पास जो पुरानी मुरलियाँ पड़ी हैं, मुझे वे चाहिएँ। बहन ने पूरा बण्डल दे दिया। मुझे लगा, पूरा खजाना मिल गया है।

स्वर्ग से भी सुन्दर हर पल

वापिस आने के बाद सैक्रामेन्टो ब्रह्माकुमारीज से सम्पर्क किया। हम अब महीने में एक बार जरूर सक्रामेन्टो सेवाकेन्द्र पर जाते हैं। निमित्त बहन का बहुत सहयोग मिलता है। अगर ब्रह्माकुमारीज के विशेष दिन होते हैं तो एक से ज्यादा बार भी जाना हो जाता है। मैं और मेरे युगल हर साल बाबा से मिलने मधुबन भी आते हैं। सेवाकेन्द्र से दूर रहते हुए भी बाबा हम बच्चों की बहुत अच्छी पालना कर रहे हैं। बाबा का बनने के बाद परिस्थितियाँ भी इतनी आईं जो पहले कभी नहीं आई थी पर सर्वशक्तिमान बाप के होते हुए कोई चिन्ता नहीं हुई। परिस्थितियाँ आईं और कब गईं, कुछ पता ही नहीं चला। मेरा अनुभव कहता है कि परिस्थितियाँ आती हैं तो बाबा की अधिक मदद का अनुभव होता है और बाबा के साथ रिश्ता और भी गहरा और सुन्दर हो जाता है। बाबा के साथ-साथ मैं विज्ञान के साधनों का भी धन्यवाद करती हूँ। पी.एम.टी.वी.के आधार से बाबा के साथ कोई मिलन मिस नहीं होता है। बाबा के संग संगमयुग का हर पल स्वर्ग से भी सुन्दर लग रहा है। बाबा का धन्यवाद करने के लिए शब्द भी कम पड़ रहे हैं।

बाबा आपकी मदद से मेरा हर काम हो रहा है।
करते हो आप, मेरा नाम हो रहा है।
बिन पतवार ही मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है।
आप जो मिल गए हो, अब किस चीज़ की कमी है।
किसी और चीज़ की अब मुझे दरकार ही नहीं है।

चमत्कार बाबा के ज्ञान की डायरी का

– ब्रह्माकुमारी शकुन्तला नेमा, नरसिंहपुर

मुझे बाबा का अलौकिक बच्चा बने करीब 18 वर्ष हो गये। मैं पेशे से शिक्षिका थी, अब सेवानिवृत्त हूँ। शिक्षण अवधि में भी मैंने नियमित मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनी तथा पारिवारिक सदस्यों और रिश्तेदारों को भी बाबा से जोड़ने की सेवा की।

विगत वर्ष मेरी छोटी बेटी वन्दना, मधुबन (आबू रोड, शान्तिवन) की यात्रा पूरी करके वापिस भिलाई (ससुराल) जा रही थी तब रास्ते में, कीमती सामान भरा उसका बैग किसी ने चुरा लिया। उसे चिन्ता बैग गुमने की नहीं थी पर चिन्ता यह थी कि हम भगवान के घर से लौटे हैं, लोग क्या कहेंगे? हर कोई पूछेगा, बाबा के घर जाने का तुम्हें यही लाभ मिला? उसने रास्ते से ही अपने पिताजी और जबलपुर में अपने एक सम्बन्धी को फोन से घटना की जानकारी दी और तभी जी.आर.पी.थाना, जबलपुर में रिपोर्ट दर्ज करा दी गई।

बाबा का कमाल, बेटी भिलाई भी नहीं पहुँच पाई थी कि कटनी जी.आर.पी. के किसी पुलिस वाले भाई का मेरे मोबाइल पर फोन आया कि क्या आपका कुछ सामान गुम हो गया है? मैंने बताया कि मेरी बेटी का काले रंग का बैग गुम हो गया है। उसमें रखे कीमती सामान, मधुबन की सौगात, गहने-कपड़े आदि की जानकारी मैंने उसे दी। असल में मेरी एक डायरी भी उस बैग में थी जिसमें बाबा के ज्ञान के नोट्स लिखे हुए थे, मैंने वह डायरी बेटी को पढ़ने के लिए दी थी। उसी में मेरा मोबाइल नम्बर भी था, जिसके आधार पर पुलिस वाले भाई ने बैग मिलने की सूचना दी।

इस सूचना के बाद बेटी के ससुराल वालों को भी परमात्मा पिता की मदद का अहसास हुआ। अब तो सास-बहू दोनों मिलकर गीता पाठशाला में ज्ञान सुनने जाती हैं। मैं महसूस करती हूँ कि जिस तरह कोयले की खान से हीरा बनता है, इसी तरह, बाबा ने कलियुगी खदान से निकालकर हम कोयले जैसे संस्कारों वालों को ज्ञान और राजयोग के द्वारा कोहिनूर हीरा बना दिया है। बाबा का बहुत-बहुत शुक्रिया। दिल गा रहा है,

चाँद को गरूर है कि उसमें नूर है,
हमें भी गरूर है कि हम बाबा के कोहिनूर हैं।।

अदब सीखना है तो कलम से सीखो, जब भी चलती है, सिर झुका कर चलती है

परिस्थिति हमारी खुशी पर कुठाराघात न करे

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

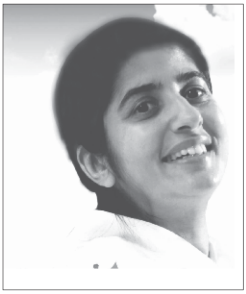

आज हमारा जीवन किस पर निर्भर है – परिस्थिति पर। परिस्थिति में भी लोगों पर, लोगों के मूड पर, लोगों के स्वभाव पर निर्भर है। मेरे मन का दायरा (स्टेट ऑफ माइंड) लोगों के स्वभाव पर निर्भर है तो मैं कैसे खुश रह पाऊँगी। जैसे मेरा शारीरिक स्वास्थ्य यदि बाहर के मौसम, बाहर के इंफेक्शन, बाहर के बैक्टीरिया पर निर्भर है, तो मैं कैसे स्वस्थ रह सकती हूँ? जब मेरे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाती है तब मुझे सारे इंफेक्शन्स हो जाते हैं, बैक्टीरिया अटैक करते हैं, सारे वायरस आ जाते हैं। लेकिन अगर मैं अपने शरीर का ध्यान रखती हूँ, प्रतिरक्षा-तंत्र को सशक्त रखती हूँ तो वो मुझ पर आक्रमण नहीं कर पाते हैं। जैसे ही मेरा प्रतिरक्षा-तंत्र खत्म हुआ तो छोटे-छोटे वायरस भी, थोड़ा-सा मौसम बदलते ही मेरे ऊपर आक्रमण कर देते हैं। बाहर का मौसम बदले, तूफान हो, बर्फ पड़े और मैं अपना ध्यान नहीं रखूँ, सिर्फ बोलती रहूँ कि मौसम ही ठीक नहीं है, सर्दी इतनी हो गई है, बीमार तो पड़ना ही है, तो यह मेरी सोच है। हम बीमार रहना चाहते हैं या स्वस्थ रहना चाहते हैं, दोनों ही विकल्प हमारे पास हैं।

परिस्थिति मेरी खुशी पर कुठाराघात न करे। जैसे हम अपने शरीर का ध्यान रखते हैं वैसे ही हमें अपने मन का भी ध्यान रखना है। यह उस समय नहीं होगा, जब परिस्थितियाँ आएंगी। हम अपने शरीर के अंदर ताकत तब नहीं भरते जब मौसम बदलता है। हम हर दिन अपने शरीर का ध्यान रखते हैं। फिर बाहर चाहे कितना भी परिवर्तन आये, बाहर का परिवर्तन अंदर प्रभावित नहीं कर सकता। शरीर के अंदर क्षमता है कि वो बाहर के परिवर्तन के साथ तालमेल (एडजस्ट) करके अपना संतुलन बना लेता है। अगर बाहर से इंफेक्शन हो रहा है तो शरीर के अंदर का प्रतिरोधी-तंत्र उसे खत्म कर देता है और हमें इसका पता भी नहीं चलता, हम अपना काम सामान्य (नॉर्मल) रूप से करते रहते हैं।

इसी तरह अगर मन का भी ध्यान रखेंगे, इसकी हर रोज सफाई करेंगे, पोषण देंगे, व्यायाम करेंगे, तो जो कुछ बाहर होता जायेगा, वो चला जायेगा, हमें पता भी नहीं चलेगा। बाहर की बातों में कोई शक्ति नहीं है जो हमारी खुशी को प्रभावित कर सकें।

कोई बहुत कुछ बुरा-भला भी कह देगा, कोई नाराज हो जायेगा, बच्चे हमसे संतुष्ट नहीं रहेंगे, बॉस गुस्सा हो जायेगा, ये सब बैक्टीरिया ही तो हैं जो बाहर से आते हैं, ये परिवर्तन ही तो है जो सारा बाहर से आ रहा है। कई कहते हैं, पानी की बारिश और व्यवहार की जो बारिश है उसमें बहुत फर्क है क्योंकि मौसम की बारिश के लिए तो मैं छाता लेकर जा सकती हूँ या मैं रेनकोट पहन सकती हूँ।

हमें भावनात्मक रक्षा (इमोशनल प्रोटेक्शन) की अपेक्षा शारीरिक सुरक्षा करना बहुत आसान लगता है। जब हम अपनी भावनात्मक रक्षा करना शुरू कर देंगे तब यह भी आसान लगनी शुरू हो जायेगी। फिर यदि कोई कुछ भी बोल दे तो इसका प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़ेगा। मान लीजिए, किसी ने अच्छे से बात नहीं की, अपमानित किया तो क्या दुख नहीं होगा? ऐसी परिस्थिति में अपने से पूछें, क्या मैं इतनी कमजोर हूँ कि हरेक के व्यवहार को अपने ऊपर हावी होने दूँ? अगर हम अपना कंट्रोल सारा बाहर दे देंगे, तो हम अपसेट हो जायेंगे क्योंकि बाहर चुनौतियाँ बहुत हैं। मौसम को देखो, हमें पता है कि अभी गर्मी है, फिर जाड़ा आयेगा, तो हम सहज ही प्रबंध कर लेते हैं। लेकिन जिस दिन मौसम अचानक ही बदल जाये, अभी-

अभी गर्मी, आधे घण्टे में बारिश, उसके आधे घण्टे में फिर बहुत ठण्ड हो जाये, तो क्या इतनी जल्दी हम प्रबंध कर पायेंगे? इस तरह के मौसम का सामना करने के लिए हम तैयार नहीं होते हैं। इसी प्रकार से हम लोगों के गलत व्यवहार का सामना करने के लिए भी एकदम से तैयार नहीं होते हैं। इस कारण से यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम पहले से ही अपना ध्यान रखें, उसके बाद दूसरों का क्योंकि दिन-प्रतिदिन हरेक के जीवन में चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं।

हमारी जो सूची है उसमें 'ये करना है, ये करना है', ये सब बातें तो होती हैं लेकिन खुशी के लिए क्या करना है, यह हमारी प्राथमिकता की सूची में कहीं भी दिखाई नहीं देता है। हम सब चीजों पर ध्यान देते-देते अपनी खुशी को ही भूल जाते हैं। फिर हम यह भी कहते हैं कि मैं खुश नहीं हूँ, कोई बात नहीं, मुझे अपना काम करने दो। यहाँ हमें यह समझना पड़ेगा कि जब पहले मैं खुद खुश रहूँगी तभी तो मैं दूसरों को खुशी दे सकती हूँ।

जिन्होंने अपनी खुशी को प्राप्ति के ऊपर निर्भर कर दिया तो वो खुश भी नहीं होते, सिर्फ राहत महसूस करते हैं और वो भी कितनी देर के लिए? बस थोड़ी देर के लिए। ऐसे लोगों के जीवन में प्राप्ति बहुत सारी आ जाती है क्योंकि जीवन में उनका एक ही उद्देश्य होता है कि हमें कुछ प्राप्त करना है। उन्हें स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या उन्हें खुशी मिली? क्योंकि प्राप्ति की जो पूरी यात्रा होती है वह एक प्राप्ति से पूरी होकर दूसरी प्राप्ति की ओर बढ़ जाती है और यह चक्र हमेशा चलता ही रहता है। खुशी की मंजिल नहीं मिलती।

उनकी खुशी उस प्राप्ति के ऊपर निर्भर हो जाती है क्योंकि वो एक संस्कार बन जाता है और उस प्राप्ति को पाने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। दूसरी बात, जो हम बहुत साधारण चीज करते हैं कि हम भविष्य में खुशी ढूँढ़ते हैं। ये होगा तो मुझे खुशी मिलेगी, यह तो इच्छा हुई। मैं लोगों से प्यार पाने की भी इच्छा रखती हूँ। मैं ज्यादा समय पाने के लिए इच्छा रखती हूँ कि मुझे और समय मिल जाये न तो मैं बहुत कुछ कर सकती हूँ, मुझे तो 24 घंटे भी कम पड़ते हैं। ये जो इच्छाओं की सूची है वह बहुत लम्बी होती जाती है और कई बार हम कहते हैं कि हमारी इच्छा पूरी ही नहीं होती है। हमारी जितनी इच्छायें पूरी होती हैं, उतनी ही उसकी सूची और लम्बी हो जाती है क्योंकि इन इच्छाओं के पीछे जो सूक्ष्म विचार होते हैं वो ये हैं कि जब ये सब इच्छायें पूरी हो जायेंगी तो मैं पूर्ण रूप से सुरक्षित व खुश महसूस करूँगी।

हम इतनी चीजों से बंधे हुए हैं कि ये सब होगा तो मैं अच्छा महसूस करूँगी और ये सब कुछ मेरे अनुसार होना चाहिए। अभी भी साधनों के ऊपर जो निर्भर है, वो हमेशा ही निर्भर रहेगा।

जब हम कहते हैं 'संकल्प हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं' तो हमें ये समझना पड़ेगा कि जो सोच मैं निर्मित कर रही हूँ वो अभी भी मेरा भाग्य बना रही है। उसी प्रकार से अभी जो मेरे साथ हो रहा है, वह अतीत में निर्मित किये गये हमारे विचारों के कारण ही हो रहा है। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह हो सकता है कि अभी आप अपना ध्यान रखते जायें। हर क्षण को पहले वाले क्षण से अच्छा बिताते जायें। आप देखेंगे कि जैसे-जैसे एक-एक पल अच्छा तो अगला पल स्वत: ही अच्छा बीतेगा। ये करने से आपके अंदर इतनी ताकत, इतनी शक्ति जमा हो जाती है कि अगर कोई परिस्थिति आपके पक्ष में नहीं भी होगी तो भी आपके अंदर इतनी क्षमता आ जायेगी कि आप उस परिस्थिति का सामना बहुत ही आसानी से कर सकते हैं। अगर आपने अपना समय भय में या पूर्वानुमान में बिता दिया तो आप इतने कमजोर हो जायेंगे कि साधारण-सी परिस्थिति का भी सामना नहीं कर पायेंगे। ❖

गुस्से में बोला गया एक बोल इतना जहरीला बन सकता है जो आपकी हजार प्यारी बातों को एक सेकंड में नष्ट कर सकता है।

पाठकों के अनुरोध पर दिसम्बर, 2004 अंक का लेख पुन: प्रकाशित

माँसाहार या शवाहार

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

जिसे हम माँस कहते हैं वह वास्तव में क्या है? आत्मा के निकल जाने के बाद पाँच तत्वों का बना आवरण अर्थात् शरीर निर्जीव होकर रह जाता है। यह निर्जीव, मृत अथवा निष्प्राण शरीर ही लाश या शव कहलाता है। यह शव आदमी का भी हो सकता है और पशु का भी। इस शव को बहुत अशुद्ध माना जाता है। इसकी भूत, मिट्टी आदि निकृष्ट चीजों से तुलना की जाती है। यदि कोई इसे छू लेता है तो उसे स्नान करना पड़ता है। जिस घर में यह रखा रहता है उस घर को अशुद्ध माना जाता है और वहाँ खाना बनना तो दूर कोई पानी भी नहीं पीना चाहता। इसको देख कर कई लोग तो डर भी जाते हैं क्योंकि आत्मा के निकल जाने पर यह अस्त-व्यस्त और डरावना हो जाता है। माँसाहार करने वाले लोग इसी शव को या लाश को खाते हैं। इसलिए यह माँसाहार, शवाहार या लाशाहार ही है।

अस्पृश्य है मृत शरीर

किसी भी पशु-प्राणी की हत्या किए बिना माँस मिल नहीं सकता। परन्तु हत्या के बाद शरीर अस्पृश्य हो जाता है। आत्मा के निकलते ही शरीर का खून पानी हो जाता है और वह अकड़ने लगता है। सड़न की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है जो सड़ांध पैदा करती है। जीवित शरीर में वर्षों तक भी बदबू नहीं आती परन्तु आत्मा के निकलते ही शरीर की दुर्गन्ध इतनी तीव्र होती है कि दूर-दूर तक भी वातावरण को बदबूदार बना देती है। मृत शरीर में तुरन्त रासायनिक परिवर्तन होने शुरू हो जाते हैं और यदि लाश को ठिकाने न लगाया जाए तो उसमें उत्पन्न कीटाणु बड़े-बड़े कीड़ों का रूप धारण कर लेते हैं जिससे संक्रामक रोग फैलते हैं जो महामारी में भी परिवर्तित हो सकते हैं। इसलिए लाश को अपवित्र और अछूत माना जाता है। विचार कीजिए, जिस शव को मात्र हाथ से छू लेने पर आदमी अपवित्र बन जाता है और उसे स्नान करना पड़ता है, उसी लाश को माँस खाने वाला व्यक्ति केवल हाथों से ही नहीं बल्कि मुँह से छूता है, नहीं, नहीं, मात्र छूता नहीं, उस लाश को दाँतों से चबाता भी है और फिर पेट में डालता भी है। ऐसा व्यक्ति जिसके पेट में लाश पड़ी हो, कितना भी स्नान कर ले, इत्र लगा ले, क्या कभी शुद्ध-पवित्र माना जा सकता है? कदापि नहीं।

माँसाहार है मौत के वारंट पर हस्ताक्षर

वध करने पर मृत शरीर एकदम से बदबू चाहे नहीं देता परन्तु सड़न की प्रक्रिया उसी क्षण प्रारम्भ हो जाती है। यह एक कठोर सत्य है कि माँस शीघ्र सड़ने वाला पदार्थ है। उसमें तुरन्त बैक्टीरियल विघटन होना शुरू हो जाता है। माँस को पकाने पर इसमें मौजूद बैक्टीरिया और परजीवी या तो नष्ट होते ही नहीं और यदि हो भी जाएँ तो उनकी मुर्दा देह माँस में ही रहती है और सड़ती है जिससे खतरनाक टॉक्सिन और विषैले पदार्थ निर्मित होते हैं जो घातक रोग पैदा करते हैं और कभी-कभी विष का असर तीव्र होने के कारण लोग मर भी जाते हैं। अमेरिका में 25 ऐसी बीमारियाँ खोजी गई हैं जो माँसाहार से होती हैं। इस देश में 13.5 लाख लोगों की मृत्यु माँसाहार से होती है जो कि मृत्यु संख्या का 60% है। अमेरिका स्थित फिजीशियंस कमेटी फॉर रेस्पोंसिबल मेडिसिन ने मुर्गे के माँस, अंडे आदि को रोग बढ़ाने वाला माना है। संस्था ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ऐसे भारतीय जो तंदुरुस्त रहने के लिए माँस, अंडे आदि का लुत्फ उठाते हैं, वे एक तरह से अपने मौत के वारंट पर खुद हस्ताक्षर कर रहे हैं। संस्था का दावा है कि भारत में जो लोग हृदय रोग की चपेट में हैं, उनमें से अधिकांश इनका इस्तेमाल करते रहे हैं। भारत में हृदय रोगियों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है और इसके लिए अक्सर खान-पान को दोषी माना जाता रहा है।

प्रकृति ने कुछ ऐसे जानवर बनाए हैं जो मृत शरीरों को

खाकर सफाई करते हैं, इनमें चील, बाज, कौए आदि हैं। इन्हें कहीं भी शव दिख जाए, झुण्डों में एकत्रित हो जाते हैं। मानव को प्रकृति ने ऐसा कोई कार्य नहीं सौंपा परन्तु कितने अफसोस की बात है कि सर्व जीवों में सर्वश्रेष्ठ समझे जाने वाले मानव ने अपने लिए जान-बूझ कर निकृष्ट कार्य को अपना लिया है। वह स्वेच्छा से वह कार्य करता है जो चील, कौए आदि मेहतर प्राणियों द्वारा किया जाता है।

पात्र आधुनिक, खाद्य जंगली

कहा जाता है कि प्राचीन समय में, जब सभ्यता का विस्तार नहीं हुआ था उस समय मानव जंगलों में रहता था। उसके पास जीवनोपयोगी साधनों का अभाव था। उस समय पेट भरने के लिए वह जंगली जानवरों का कच्चा माँस खा लेता था। धीरे-धीरे कृषि प्रारम्भ हुई। अनेक प्रकार के खाद्यों का उत्पादन हुआ, शहर बसे और मानव ने अनेक जीवनोपयोगी साधनों का आविष्कार कर उस आदिम जंगली जीवन को तिलांजलि दे दी। उस समय की भेंट में आज उसके पास मकान, वस्त्र, जूते, बर्तन, मोटर, कम्प्यूटर आदि सब उत्तम प्रकार के आरामदायक साधन हैं। उपरोक्त तथ्य यदि सत्य है तो मानव ने काफी विकास कर लिया है। वह हाथ में लेकर खाने की बजाय, पत्तों पर रख कर खाने की बजाय आधुनिक डिजाइन की प्लेट्स में चम्मच के प्रयोग से खाता है। डायनिंग टेबल पर बैठना भी उसने सीख लिया परन्तु प्रश्न यह है कि वह खाता क्या है? उसकी प्लेट में है क्या? यदि इतनी साज-सज्जा, रख-रखाव को अपना कर, इतना विकास करके भी उसकी प्लेट में रखा आहार यदि आदिम काल वाला ही है, यदि इतना विकास करके भी वह उस जंगली मानव वाले खाद्य को ही अपनाए हुए है तो विकास क्या किया? यह तो वही बात हुई कि मटका मिट्टी के स्थान पर सोने का हो गया पर अन्दर पड़ा पदार्थ जहर का जहर ही रहा। यदि सभ्यता ने विकास किया तो क्या सिर्फ बर्तनों और डायनिंग टेबल-कुर्सियों तक ही विकास किया? क्या खाद्य के नाम पर सभ्यता नहीं आई? फर्क इतना ही तो है कि उस समय जानवर को मारने के तरीके दूसरे थे और आजकल तीव्रगति वाली मशीनें ये कार्य कर देती हैं परन्तु मुख तो अपने को मानव कहलाने वाले का ही है। मारने के हथियार बदल गए परन्तु खाने वाला मुख नहीं बदला। मुख तो मानव का ही है।

पेट बन गया श्मशान

शव को जब श्मशान में ले जाते हैं तो उसे चिता में लिटा कर आग लगाई जाती है परन्तु मानव को देखिए, वह शव को अथवा शव के टुकड़ों को रसोईघर में ले आता है। फिर उनको रसोईघर के बर्तनों में पकाता है तो उसकी रसोई क्या हो गई? श्मशान ही बन गई ना! और फिर उस लाश को मुँह के माध्यम से पेट में डालता है। सच पूछो तो ऐसे व्यक्ति के घर की हवा भी पतित बनाने वाली है। संत तुकाराम कहते हैं कि पापी मनुष्य यह नहीं देख पाता है कि सभी प्राणियों में प्राण एक सरीखा होता है। जो व्यक्ति न तो स्वयं कष्ट पाना चाहता है, न मरना चाहता है वह निष्ठुरतापूर्वक दूसरों पर हाथ कैसे उठाता है? यही भाव संत दादू दयाल का है –

कोई काहू जीव की, करै आत्मा घात।
सांच कहू संसा नहीं, सो प्राणी दोजखि जात।।

पूरी गम्भीरता के साथ संत दादू दयाल जी कहते हैं कि 'मैं सच कहता हूँ, मुझे इसमें तनिक भी शंका नहीं है कि ऐसा प्राणी नर्क में जाता है अर्थात् पाप में डूब जाता है।' वास्तव में माँस खाने वाले को इस शब्द का अर्थ समझना चाहिए। माँस अर्थात् 'माम् सः' – मेरा वह। जिसको मैं खा रहा हूँ वह मुझे खाएगा। यह एक दुष्चक्र है। हिंसा इस दुष्चक्र को जन्म देती है – 'उसके इस जन्म में मैं उसे खाता हूँ, अगले जन्म में मुझे हिंसा का शिकार होना होगा और इस प्रकार मेरा भोजन ही मेरा काल बन कर जन्म-जन्मांतर तक मेरे पीछे लगा रहेगा।' इसलिए माँ प्रकृति की बड़ी सन्तान मानव को अपने छोटे भाइयों (मूक प्रणियों) को जीने का अधिकार देते हुए 'मैं जीऊँ और अन्य को मरने दो' इस राक्षसी प्रवृत्ति को छोड़ देना चाहिए। ❖

एक प्रमाण परमात्मा की प्राप्ति का

ब्रह्माकुमार देवेन्द्रनारायण पटेल, मुलुंड (मुंबई)

भारत के दूरदराज के देहातों में आज भी रेल की पटरी बिछाई हुई नहीं है। जहाँ दुपहिया गाड़ी दिखना भी नामुमकिन है वहाँ अगर अचानक ट्रेन दिखाई पड़े तो गाँव वालों को बहुत ही आश्चर्य हो और उनकी खुशी आसमान छूने लगे। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलुंड सबजोन की निमित्त ब्रह्माकुमारी गोदावरी बहन को संकल्प आया कि देहातों में सरकार की ट्रेन जब पहुँचेगी तब पहुँचेगी लेकिन उससे पहले शिव बाबा का संदेश देने वाली ट्रेन जरूर पहुँचनी चाहिए। इसके लिए नासिक से शिवदर्शन एक्सप्रेस ट्रेन, जो सड़क पर चलती है, मंगवायी गयी।

मुंबई, नवी मुंबई, थाना, पूना, पालघर और रायगड़ आदि छह जिलों में 33 दिनों तक हजारों गाँवों और शहरों में पांच हजार कि.मी.की रेलयात्रा 'राजयोग द्वारा समाज विकास अभियान' के नाम से निकाली गई। एक करोड़ से भी अधिक मनुष्यात्माओं को, 'शिवबाबा अब नीचे से ऊपर वापिस जाने वाले हैं', 'अब जल्दी करो, जागो, उठो और परमात्मा को पहचान लो, अब नहीं तो कब नहीं' ऐसा शुभ संदेश पहुँचाया गया। लोग अवाक् हो जाते थे, अरे! सड़क पर ट्रेन कैसे आ गई! बाबा की ट्रेन लोगों को दिखाकर हम असली घर वापिस जाने की याद दिलाते थे। यात्रा के दौरान दिल धड़काने वाले अनेक अनुभव हुए जो इस प्रकार हैं –

घुस गया कुर्ते के अंदर कुछ

आगगाड़ी आकार की दिखने वाली इस ट्रेन को एक इंजन तथा तीन डब्बे भी थे और यह रिवर्स नहीं होती थी इस कारण रात को ट्रेन की पार्किंग के लिए हम बड़ी जगह ढूँढ़ते थे। एक शहर में सेवाकेन्द्र पर रात को पहुँचे, वहाँ पार्किंग की जगह पास में नहीं थी इसलिए ट्रेन को थोड़ी दूर एक बड़ी सड़क पर ले गए, जो आगे से बंद हो जाती थी। वहाँ अंधेरा था, थोड़ी-सी झाड़ियाँ भी थी। ट्रेन को जैसे-तैसे पार्क तो कर दिया परंतु अंधेरे में क्या हुआ, मालूम नहीं। मेरे कुर्ते के अंदर कुछ घुस गया। दिनभर, बदन के पसीने पर कोई धीरे-धीरे ठंडी हवा फूंक रहा हो, ऐसा महसूस होता रहा, अच्छा लग रहा था, बीच-बीच में खुजली भी आती थी।

एकदम अशरीरी कर दिया

मैंने साथी सेवाधारी भाई को कहा, देख तो भाई, कुछ दिख रहा है? उसने मेरा पूरा बदन आगे-पीछे चेक किया और बोला, कुछ नहीं है। मैं निश्चिंत हो गया। हम सेवाकेन्द्र पर आये और भोजन करने बैठ गये। भोजन करते-करते मेरे कंधों पर कुछ चल रहा है, ऐसा लगा। मैंने फटाक से मुट्ठी में दबा दिया। अंदर क्या है, मालूम नहीं। बाथरूम में गया, कुर्ता-बनियान निकाल कर देखा, अंदर आधाफुट लम्बी मोटी-सी, गोरी-सी छिपकली थी!! बाबा....आपकी कितनी मदद! पूरे बदन के ऊपर छिपकली चक्कर मार रही थी, मैं इतना रास्ता चलकर आया कैसे? हम कुर्सी पर बैठे हों और मालूम पड़े कि नीचे से एक छिपकली ऊपर आ रही है, हम फटाक से खड़े हो जाते हैं और मैं....? बाबा आपकी ही कमाल है, मुझे एकदम अशरीरी कर दिया। मालूम ही नहीं पड़ने दिया। सब देखने वालों को बड़ा ही आश्चर्य लग रहा था। यही परमात्म प्राप्ति का कमाल है, मुझे कुछ होने नहीं दिया।

परमात्मा को पाने के बाद वह हमारा हो जाता है

दूसरे दिन हम एक गाँव में गये। पूरा दिन सबको शिव बाबा का संदेश देते-देते रात को 11 बजे एक जगह सोने गये। दिनभर की थकान के बाद बहुत नींद आ रही थी। उतने में ही बिजली चली गई। सब लोग परेशान हो रहे थे,

मच्छर भी काट रहे थे। सबका कहना था, इस गाँव में लाइनमैन बाहर से आता है, अब क्या मालूम लाइट कब आयेगी? मैंने बाबा को कहा, बाबा, दस मिनट में बिजली आनी ही चाहिए, मैं नहीं जानता हूँ। फिर तो दस मिनट में ही बिजली आ गई। थोड़ी देर के बाद फिर चली गई। बाबा को मैंने कहा, बाबा, अब दो मिनट में बिजली आनी चाहिए और दो मिनट होते ही बिजली आ गई। आसपास वालों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, परमात्मा की प्राप्ति का यही प्रमाण है। आप भी परमात्मा को पा लो, परमात्मा आप की भी सुनेगा। परमात्मा को पाने के बाद वह हमारा हो जाता है। जिसका बाप स्वयं 'परमात्मा' हो उस बच्चे को क्या फिकर?

रुक गई गाड़ी

फिर आगे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पार करने थे। करीबन 10-12 घंटे का रास्ता तय करना था। ट्रेन 50-60 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही थी। एक शहर में जैसे ही पुल पर चढ़े, अचानक ट्रेन का ब्रेक फेल हो गया। चालक गाड़ी रोकने की कोशिश कर रहा था। आगे भी बहुत ही गाड़ियाँ चल रही थी। चालक ने गियर डाउन किया, फिर भी गाड़ी रुकी नहीं, रुकना जरूरी था क्योंकि आगे की गाड़ियों के करीब पहुँच गये थे। हम बाबा को पूरी ताकत से अंदर ही अंदर याद कर रहे थे। शिव बाबा की याद से बहुत बड़ा चमत्कार हुआ, गाड़ी रुक गई। बाबा ने ही गाड़ी रुकवाई वरना हम तो अपनी ओर से ताकत लगा चुके थे। गाड़ी में बैठने वाले और सड़क पर चलने वाले सभी को आश्चर्य लगा और कहने लगे, यह ईश्वरीय शक्ति का ही चमत्कार है वरना बहुत बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। शिव बाबा ने ही सबकी सुरक्षा की।

ये सब घटनाएँ ही प्रमाण हैं परमात्मा की प्राप्ति की। परमपिता शिव परमात्मा को पाने के बाद वे हमारी सब प्रकार से सहायता करते हैं। आप भी इसका अनुभव कीजिए। परमात्मा की प्राप्ति के लिए नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से तुरंत संपर्क कीजिए। ❖

आँख का इलाज किया 'ज्योति बिन्दु' ने

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

घटना अतीत की है, मेरी आँखें अचानक फड़फड़ाने लगीं। नयन-स्थिरता जैसेकि रही ही नहीं। अजीब तरीके से नेत्र एक सेकेण्ड में कई-कई बार झपकते। पढ़ना-लिखना भी दूभर हो गया। लगने लगा कि ऐसे कैसे जीऊँगी? किसी के सामने आने में भी शर्म आने लगी।

कई डॉक्टरों को दिखाया, दवाइयाँ डालीं पर सब बेअसर। मन ही मन बाबा को बहुत याद भी करती और उलहने भी देने लगी। इलाज हेतु कई अस्पतालों में भी बहुत चक्कर लगाए।

उन दिनों देहली में जखीरा रोड पर 'जीवन-एम' नाम की नेत्र डॉक्टर की एक दुकान हुआ करती थी। किसी ने बताया कि वह आँख के 'लाइलाज' रोग का भी 'इलाज' करता है। आशा की किरण जगी, मैं वहाँ गई। डॉक्टर साहब को बताया पर यह क्या? न तो उन्होंने कोई दवाई दी, न इंजेक्शन, न गोलियाँ, न परहेज, बस, यही कहा कि सामने दीवार पर पैन्सिल या स्याही का एक नन्हा-सा बिन्दु लगा लेना और कुछ दूरी से उसे लगातार एकटक देखती रहना। इसी से आँखें ठीक हो जाएँगी।

घर आकर ज्यूँहि दीवार पर पैन्सिल का बिन्दु लगाने लगी, त्यूँहि विचार मन में कौंधा कि पैन्सिल का बिन्दु क्यों लगाऊँ, ज्योति का बिन्दु क्यों न लगाऊँ? बस, शिव बाबा का कास्केट सामने लगा दिया। स्विच ऑन करके उस अति ज्योति कण पर आँखें टिकाने लगी। एकटक उधर ही देखने लगी। लगातार ध्यान केन्द्रण से आश्चर्यजनक लाभ हुआ। वाह! आँखों का झपकना एकदम सामान्य हो गया और आज तक आँखें ठीक हैं। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। देखी मेरे ज्योतिबिन्दु की कमाल!

मैं डॉक्टर तो नहीं हूँ पर तब से आँखों की यह डॉक्टरी सबको बताने लगी हूँ। आवश्यकता पड़े या न पड़े पर ज्योति बिन्दु शिव परमात्मा पर थोड़ा समय ध्यान टिकाना हम सबके लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। ❖

ईर्ष्या : मन के लिए धीमा जहर

ब्रह्माकुमारी श्वेता, शान्तिवन (आबू रोड)

आजकल स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। तन को स्वस्थ रखने के लिए तथा बीमारियों से मुक्त रहने के लिए योगासन, प्राणायाम, हठयोग, ध्यानाभ्यास, प्राकृतिक चिकित्सा, सामूहिक परामर्श, सकारात्मक चिन्तन इत्यादि विधियों का सहयोग ले रहे हैं।

शरीर में कोई भी रोग उत्पन्न होने पर या उसके लक्षण महसूस होने पर हम तुरंत डॉक्टर के पास जाते हैं। उसकी दी हुई दवाइयाँ लेते हैं, परहेज करते हैं तथा जल्दी से जल्दी स्वस्थ होने की कोशिश करते हैं क्योंकि हम यह अनुभव करते हैं कि हमारे बीमार होने से हमारी सारी दिनचर्या, काम-धंधा प्रभावित होगा। किंतु अगर मन बीमार हो जाये तो उसका पता ही नहीं चलता। अगर पता चल भी जाये तो मन स्वयं को बीमार मानना ही नहीं चाहता। जब वह स्वयं को बीमार मानना ही नहीं चाहता तो उसके उपचार की बात भी बेमानी हो जाती है। अगर मनुष्य का सिर, दर्द से फटा जा रहा हो तो उसका पूरा परिवार आधी रात को ही उसे उठाकर अस्पताल ले जायेगा और वह व्यक्ति भी अस्पताल पहुँचने का इच्छुक होगा किंतु यदि घृणा, क्रोध, ईर्ष्या से उसका दिलो-दिमाग फटा जा रहा हो तो वह किसी ध्यानी या ज्ञानी के पास नहीं जायेगा। पूरा जीवन इंसान अपने मन की बुराइयों के साथ जीता है किंतु कभी उन ज़हरीली बुराइयों के इलाज की बात नहीं सोचता।

आप अपने जीवन, अपने साधनों से संतुष्ट हैं, प्रसन्नतापूर्वक जीवन जी रहे हैं। एक दिन आपका एक स्कूल का दोस्त आपसे टकरा जाता है। आप उसके सूट-बूट, ठाठ-बाट को देखते हैं। उसकी गाड़ी का मॉडल आपको अपनी गाड़ी से महंगा लगता है। वह आपसे कहीं अधिक ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित है। आप सोचते हैं कि यह तो

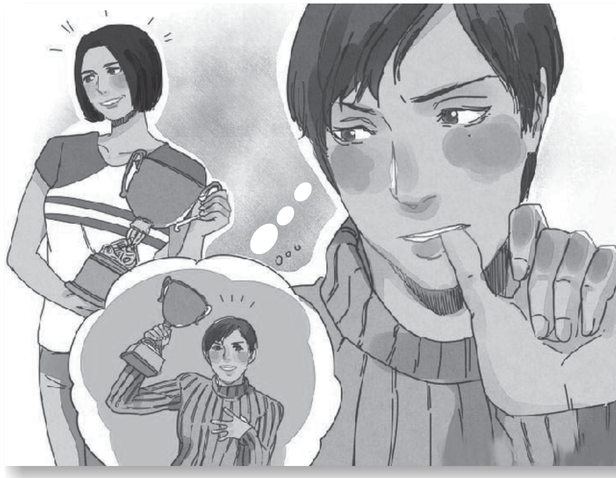

स्कूल में, पढ़ाई में हमेशा मुझसे पीछे रहा, कभी इसके इतने अच्छे अंक नहीं आये, फिर यह इतना आगे कैसे बढ़ गया। आपके मन में असंतुष्टता का बीज उत्पन्न हो गया। अभी तक जिन साधनों को देख आप स्वयं को प्रसन्न अनुभव करते थे, अब वही साधन आपकी अप्रसन्नता का कारण बन गये। दिन भर यही चिन्तन चलने लगा। रात को भी यही विचार आपको काटते रहे। अब मान लो, आपका वह दोस्त आपके पड़ोस में आकर रहने लगे तो क्या होगा? आपका हँसता-खेलता, खुशहाल, संतुष्ट जीवन दुखमय बन जायेगा। आपका हर दिन उसे देखने में, उससे तुलना करने में, उससे आगे जाने की ऊहापोह में बीतेगा। रोज-रोज मन की यह कसमसाहट आपको तनाव से भर देगी।

अब यह कौन-सा रोग है जो व्यक्ति के सुकून को छीन लेता है। यह तन का नहीं, मन का रोग है जिसका नाम ईर्ष्या है लेकिन व्यक्ति इसे पहचान नहीं पाता। ऊपर से देखने में तो वह स्वस्थ लग रहा है पर मन की इस बीमारी को नहीं देख पा रहा है। अब वह इसका इलाज कैसे करे?

मन की इस व्यथा से कैसे मुक्ति पाये?

ईर्ष्या के कारण

देखने में आता है कि किसी अनजान व्यक्ति के आगे बढ़ने पर ईर्ष्या नहीं आती, जब व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों या अपने पेशे से जुड़े लोगों को या अपने से छोटे या अपने बराबर वाले को अपने से अधिक पाता है तो वह खुद को छोटा अनुभव करने लगता है और ईर्ष्या में जल उठता है। यह प्रक्रिया केवल तभी सक्रिय होती है जब वह अपने आसपास के छोटे अथवा समकक्ष व्यक्ति को प्रगति पथ पर बढ़ते हुए देखता है। यह प्रगति किसी भी क्षेत्र में हो सकती है धन, रूप, पद, मान, कला, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ आदि। एक इंजीनियर को इस बात से ईर्ष्या नहीं होगी कि अमुक व्यक्ति कल तक तो एक साधारण नेता था, आज वह एक प्रतिष्ठित मंत्री बन गया किंतु इस बात से वह अवश्य परेशान हो सकता है कि कल तक उसके अधीन काम करने वाला उसका जूनियर इंजीनियर आज उससे आगे बढ़कर इतने बड़े पद पर कैसे पहुँच गया। आखिर ऐसा क्यों होता है? जब भी आपके करीबी लोगों में कोई आगे बढ़ता है तो ईर्ष्या क्यों होती है? सामने वाला व्यक्ति तो अपनी दुनिया में खुश है, उसे आपके मन में चल रहे संकल्पों का भान भी नहीं है और आपने उसे नीचा दिखाने के प्रयास में अनजाने में उसे अपने से अधिक महत्वपूर्ण स्थान दे दिया। आपने मान लिया कि वह आपसे कहीं अधिक योग्य है, विशेषता संपन्न है, आप उसके आगे कुछ नहीं हैं। आपने अपने मन की सारी शक्ति, सारे संकल्प, इतना बहुमूल्य खजाना अनजाने में ही उसे अर्पित कर दिया।

ईर्ष्या के लक्षण एवं परिणाम

कैसे जानें कि हमारे अंदर ईर्ष्या है? जैसे जब बुखार आता है तो शरीर की नाड़ी की गति बढ़ जाती है, हम स्वयं को थका-थका, शक्तिहीन अनुभव करते हैं, हम थर्मामीटर से शरीर के तापमान की जाँच करते हैं कि कहीं बुखार तो नहीं है, शरीर बीमार तो नहीं है। ऐसे ही जब मन के संकल्पों की गति बढ़ जाये, मन थका-थका, उदास अनुभव करे तो चेक करें कि कहीं मन बीमार तो नहीं है। जब मन बीमार होता तो शरीर में भी विष द्रव्यों का निर्माण होता है। लंबे समय की मन की बीमारी तन की बीमारी के रूप में बाहर आती है। आज समाज में बढ़ रहे मनोरोग, हाई बी.पी., डायबिटीज, कैंसर जैसे रोगों के तार कहीं न कहीं मन से ही जुड़े हैं।

ईर्ष्या को पहचानने के कुछ सामान्य लक्षण ये हैं कि जिस व्यक्ति से आप ईर्ष्या करते हैं, उससे मिलने से कतराते हैं। आप सोचते हैं कि इससे जितना बचा जाये, उतना अच्छा क्योंकि ऐसे व्यक्ति का सामने पड़ना आपके मन को दुखा जाता है। आपका मन उसकी उपलब्धियों के आगे खुद को बौना महसूस करता है।

दूसरों से तुलना करने व ईर्ष्या करने से स्वयं का विकास अटक जाता है। तुलना करने वाला व्यक्ति कभी भी जीवन में संतुष्ट नहीं रह सकता, न दूसरों को संतुष्ट कर सकता है, उसका पूरा जीवन दूसरों को देखने में ही चला जाता है। ईर्ष्या व्यक्ति के ध्येय प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट है।

इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जहाँ ईर्ष्या के कारण राजाओं के राज्य उजड़ गये। मंथरा की ईर्ष्या से प्रारंभ हुई रामायण का अंत राम के वनवास और रावण के विनाश से हुआ। दुर्योधन की ईर्ष्या ने महाभारत युद्ध को जन्म दिया। मनोविकारों में ईर्ष्या का महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन आमतौर पर इसे अनदेखा कर दिया जाता है। जब व्यक्ति क्रोध में आता है तो यह स्वयं को व सामने वाले को प्रत्यक्ष दिखाई देता है परंतु ईर्ष्या एक गुप्त मनोरोग है जो किसी को दिखाई नहीं देती परंतु इसे स्वयं ही समझना होता है। ईर्ष्या अहंकार की पुत्री है। यह एक ऐसी अग्नि है जो व्यक्ति के सुख-शांतिपूर्ण व्यक्तित्व को पूरी तरह जला डालती है।

ईर्ष्या से मुक्ति

ईर्ष्या से कैसे मुक्ति पायें? कुछ सामान्य बातों का पालन करने से एवं राजयोग के गहन अभ्यास से इस मनोरोग से मुक्ति पाई जा सकती है।

1. ईर्ष्या को ऐसे देखें जैसे मन में गंदा नाला बह रहा है जिसकी दुर्गन्ध आपके मन को बेचैन कर रही है।

2. मन की लगाम अपने हाथ में रखें। जब भी व्यर्थ संकल्प आयें, मन को चेतावनी दें कि अगर उसने ईर्ष्या करना बंद नहीं किया तो उसे कड़ी सजा मिलेगी।

3. स्वयं को विश्व पिता या विश्व माता के रूप में देखें। जैसे एक माँ बच्चे की उन्नति से खुश होती है। वह भी मेरा ही आत्मिक भाई या बहन है। एक बार उसकी उन्नति में थोड़ी देर के लिए अपने को खुश करके देखें। इसके बाद आप दोनों भावों के अंतर को अनुभव करें। जब आप ईर्ष्या में थे तब कैसा अनुभव कर रहे थे और जब आप उसकी खुशी में खुश हैं तो कैसा लग रहा है? जब आप ईर्ष्या कर रहे थे तब मन की स्थिति कैसी थी जैसे मन किसी भट्ठी में जल रहा था। मन के संकल्पों की गति असामान्य रूप से अधिक थी। जब आप प्रेमपूर्ण थे, खुशी से भरपूर थे, उस समय आपके मन की स्थिति कैसी थी? आपका मन शांत व सामान्य था। मन के संकल्पों की गति भी सामान्य थी। जब तन बीमार होता तो हम तन को शक्तिशाली टॉनिक, दवाई आदि देकर शक्तिशाली बनाते हैं, उसकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाते हैं, तामसिक खान-पान का परहेज करते हैं ताकि जर्म्स खत्म हो इस बीमारी से मुक्त हो सके। इसी प्रकार मन के बीमार होते ही तुरंत व्यर्थ और नकारात्मक संकल्पों का परहेज करें। साथ ही राजयोग द्वारा मन को शक्तिशाली बनायें ताकि वह इस मनोविकार (मेन्टल जर्म्स) से लड़ सके।

4. आप सोचें कि अगर सामने वाले को ये प्राप्तियाँ हो रही हैं तो जरूर उसका भाग्य है या पूर्व जन्मों का फल है या वर्तमान का पुरुषार्थ है जो उसे मिल रहा है। कहते हैं, कोई ना तो किसी का भाग्य बना सकता है, ना बिगाड़ सकता है। जो आपके भाग्य में है, वह कहीं से भी आकर आपको मिलेगा और जो भाग्य में नहीं है, वह आकर भी भाग जायेगा। इसलिए संतुष्ट रहें, खुश रहें।

5. मन को बार-बार समझाइये। आप अपने विचारों से, गुणों से श्रेष्ठ बनिये, ना कि साधनों से।

6. अपनी उपलब्धियों, विशेषताओं, गुणों को देखें, अपने श्रेष्ठ विचारों के शुद्ध स्रोत को देखें जिसे ईर्ष्या गंदा कर रही है।

7. जैसे दिन-भर के पसीने, धूल-मिट्टी से साफ होने के लिए हम घर आकर स्नान करते हैं। उसी प्रकार दिन में बीच-बीच में परमात्मा के शुद्ध प्रेम का झरना स्वयं पर अनुभव करें, इससे मन पर जमी ईर्ष्या की धूल साफ हो जायेगी और उसका स्थान प्रेम ले लेगा।

8. जिसके प्रति भी ईर्ष्या का भाव उठे, तुरंत उस इंसान पर प्रेम के शीतल जल का छिड़काव करें। अपने मन से ईर्ष्या की जलती लकड़ियों को खींचकर बाहर निकालें परिणामरूप चित्त से ईर्ष्या तिरोहित हो जायेगी।

इस दुनिया में कोई आपको दुखी नहीं कर सकता जब तक कि आप खुद दुखी ना होना चाहें। जानबूझकर दुख लेने की बजाय अपने पर रहम करें। हमेशा सोचें कि यह सृष्टि एक रंगमंच है, मैं एक एक्टर हूँ, इसमें मेरा श्रेष्ठ पार्ट है। अन्य आत्मायें भी अपना पार्ट अच्छी रीति से बजा रही हैं। इस ड्रामा के हरेक पार्टधारी के पार्ट से मैं संतुष्ट हूँ। जो हो रहा है, वह अच्छा है, जो होगा वह और भी अच्छा होगा। मुझे सारा दिन प्रसन्न और संतुष्ट रहना है। ❖

जितनी हम दूसरों की कमी देखेंगे और उनकी आलोचना करेंगे, उतनी ही हमारे जीवन से शांति समाप्त होती जायेगी

अपनी जुबान से किसी की बुराई मत करो क्योंकि बुराइयाँ हममें भी हैं और जुबान दूसरों के पास भी है

जेल में रहते भी जेल महसूस नहीं होती

ब्रह्माकुमार सुरेश, येरवडा जेल, महाराष्ट्र

स्वयं को परम भाग्यशाली समझता हूँ कि इतना घोर अपराधी होने के बावजूद क्षमा के सागर शिवबाबा ने मुझे क्षमा करके अपना बनाया। सन् 2007 में मैं पारिवारिक केस में जेल में आया। पिंजरे में डालने से जैसे पक्षी फड़-फड़ करता है उसी तरह मैं भी कर रहा था। जेल में रहते पता चला कि यहाँ पर ओमशान्ति का सत्संग चलता है लेकिन मैंने सुनकर भी अनसुना कर दिया क्योंकि बुरे संग में समय गंवाने की आत्मा को लत (आदत) पड़ गई थी। एक बार, 'चलो सत्संग सुनते हैं', ऐसा कहकर कुछ मित्र बुलाने के लिए आये। मैं उनके साथ उस हॉल में गया जहाँ पहले से कुछ भाई ध्यान में बैठे थे। मैं भी उनमें जाकर बैठ गया। कुछ देर बाद एक सफेद वस्त्रधारी दिव्य भाई का आगमन हुआ और उन्होंने मेरा नाम पूछा। मैंने कहा, सुरेश। उस दिव्य भाई ने कहा, सुरेश तो आपके शरीर का नाम है परंतु आपकी भृकुटी में जो आत्मा है वह बहुत दिव्य है, उसे महान बनाओ।

आत्माओं के कल्याण के प्रति सदा सजग

इसके बाद ब्रह्माकुमारी बहनों ने 7 दिन का ज्ञान का कोर्स कराया। उस समय बड़े ही अच्छे अनुभव हुए। हम कौन हैं, हमारे पिता कौन हैं, उन पिता का स्वरूप क्या है, सृष्टि-चक्र क्या है, इसका परिवर्तन कैसे होता है, ये सब बातें सुनकर लग रहा था कि हम इस लौकिक दुनिया में हैं नहीं, हम तो उस अलौकिक दुनिया में हैं। विभिन्न उदाहरण देकर, ज्ञान की परियों ने हमें बाबा के इतने करीब लाया कि हम बाबा के बच्चे बन ही गये। जिस तरह लौकिक माँ अपने बच्चे के कल्याण के प्रति हमेशा सजग रहती है, उसी तरह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बहनें और भाई भी आत्माओं के कल्याण के प्रति हमेशा सजग रहते हैं।

शिव बाबा की मधुर मुरली से आत्मा बनी महान

आत्मा की कमजोरी से माया को जन्म मिलता है। इस कमजोरी को समाप्त करने का साधन है रोज की ज्ञान-मुरली इसलिए मैंने कभी मुरली मिस नहीं की। हर रोज की मुरली सुनने से मेरे अन्दर के पाँच विकारों का सफाया हो गया। मुझे आत्मा के 7 गुणों की अनुभूतियाँ होने लगीं जिनके आधार पर मुझमें मानवीय मूल्यों (सहनशीलता, धैर्य, नम्रता, पवित्रता, परोपकार) की वृद्धि होने लगी। मैं परमात्मा की अनुभूति करने लगा, अपना पार्ट मुझे सुखमय दिखने लगा। जैसे सूर्य का प्रकाश फैलने के बाद चारों तरफ उजाला फैलता है उसी तरह रोज की मुरली सुनकर आत्मा में ज्ञान प्रकाश फैल गया। बाबा की मुरली से जीवन ही पलट गया। मुझे कभी नहीं लगता कि मैं जेल का जीवन जी रहा हूँ, मुझे तो ऐसा लगता हैं कि मैं एक आध्यात्मिक जीवन जी रहा हूँ। ये सब उस मुरलीधर शिवबाबा का जादू है। मुरली सभी दुखों से छुड़ाने वाली है, मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिवान और पवित्र बनाने वाली है।

अमृतवेले मिलती हैं खुशी और शान्ति

धीरे-धीरे मैं ज्ञान में आगे बढ़ने लगा, औरों को बाबा का परिचय देने लगा, रोज प्रात:4.00 बजे से 4.45 बजे तक अमृतवेला करने लगा जिससे मुझे बहुत खुशी और शान्ति मिलने लगी। मैं साक्षात् परमात्मा के साथ रूह-रिहान करने लगा। शिवबाबा मुझे अमृतवेले बहुत शक्ति देते हैं। मैं उठते ही बड़े ही प्यार से बाबा को गुडमॉर्निंग करता हूँ। 'बाबा मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं इस संसार में एक मेहमान की तरह हूँ', इस तरह से शिवबाबा से मीठी-मीठी बातें करता हूँ। मुझे बहुत आनंद मिलता है कि मैं अपने परमधाम में साक्षात् अपने बाबा के सम्मुख बैठा हूँ, ऐसा अनुभव प्रतिदिन होता है। हर बात में बाबा को याद

करने से जीवन जीने का मजा आ रहा है। दुनिया का कोई भी आनंद इस आनंद के सामने फीका है। इस विकारी सृष्टि में बाबा को पाना ही सबसे बड़ी प्राप्ति है। मैं सबको ओमशान्ति कहकर बाबा की स्मृति दिलाता हूँ। सबको भाई-भाई की दृष्टि से देखता हूँ, ऐसी याद से अपार खुशी में रहता हूँ। बाबा को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि मुझे जीवन बदलने का मौका जेल में दिया, वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य वाह!

जेल प्रशासन बना सहयोगी

शिव बाबा हमेशा कहते हैं, मुझे अगर किसी का कल्याण करना है तो किसी को भी निमित्त बना कर कल्याण करता हूँ। रोज की मुरली सुनने के लिए हमें अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ा। पर यहाँ के वरिष्ठ जेलर का हमें हर परिस्थिति में सहयोग मिला। इसलिए हम सब कैदी भाई जेल प्रशासन का तहे दिल से आभार व्यक्त करते हैं। साथ में, मुरली सुनाने के लिए जो भाई-बहनें आते हैं उनका भी आभार व्यक्त करते हैं। शिव बाबा का प्यार पाकर मन में एक ही गीत बजता है, 'पाना था सो पा लिया अब काम क्या बाकी रहा'।

❖

क्रोध रूपी काँव-काँव से बचें

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी हन्दूजा, उत्तम नगर, दिल्ली

क्रोध शब्द का प्रथम अक्षर है क्रो। अंग्रेजी में इसका अर्थ है (Crow = कौवा) कौवा, जो सदा काँव-काँव करता रहता है। उसे देख कर कोई भी राजी नहीं। इसी तरह क्रोध भी न कोई करना चाहता है, न कोई दूसरे के क्रोध को सह पाता है। क्रोध बहुत तबाही मचाता है। क्रोध आने से मन की शान्त स्थिति बिगड़ जाती है, मस्तिष्क की ग्रन्थियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। क्रोध के वक्त रक्त संचरण की गति तेज हो जाती है, जो सबसे ज्यादा मस्तिष्क पर कुप्रभाव डालती है। इसलिए क्रोध के समय मस्तिष्क काम करना बन्द कर देता है और क्रोधी वो कर बैठता है जो कभी नहीं करना चाहिए। क्रोध सर्वाधिक हमारे बोल को प्रभावित करता है। अति कटु शब्द व अति अप्रिय शब्द क्रोधी की जुबान से तीर की भांति निकलने लगते हैं। बाद में उसे शर्मिंदगी महसूस होती है।

क्रोध से पनपता है भय और भय से जन्मता है झूठ। अगर माता-पिता बहुत क्रोधी हैं तो उनके बच्चे कभी सच बोल नहीं पाते। क्रोध के डर से कोई बात बता नहीं पाते। पति या पत्नी में से कोई भी अगर क्रोधी स्वभाव का है तो दूसरा उससे डरता है और डरकर अपनी गलती व गम छिपाता है। जहाँ क्रोध नहीं, वहाँ न डर है, न झूठ। क्रोध दूरियाँ भी बढ़ाता है, बीमारियाँ भी लाता है, खूब तोड़-फोड़ भी कराता है और शीतल शान्त चेहरे की भाव-भंगिमा भी खराब कर देता है। क्रोध का मुख्य कारण है मन की निर्बलता। इस निर्बलता की वजह से हम अप्रिय बातें, कटु वचन, कठिन परिस्थितियाँ, कमजोर हालात आदि सहन नहीं कर पाते और क्रोध कर बैठते हैं। मन सबल हो तो सब कुछ सहन हो सकता है। मन की सबलता से हम अपनी व अन्य की हर बात को आसानी से समझ व समझा सकते हैं। जब कार्यभार ज्यादा हो, सहयोगी कोई न हो और निद्रा अपूर्ण हो तो भी क्रोध आता है। राजयोग द्वारा इन कारणों पर विजय पाई जा सकती है। राजयोग हमारे मनोबल को बढ़ा देता है जिससे क्रोधजीत, शान्तिप्रिय जीवन बन जाता है। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

शुभ भावनाओं का शुभ फल

ब्रह्माकुमार विश्वकुमार, केलाबाडी, दुर्ग (छ.ग.)

परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने ब्रह्मामुख से हम वत्सों को ज्ञान व योग की शिक्षा देकर विभिन्न शक्तियों व गुणों से सजाया है। उसमें भी शुभ भावना का प्रभाव तो चमत्कारी है। शुभभावना से हिंसक व्यक्ति भी परिवर्तित हो जाता है। यह दर्शाने वाली एक घटना सबके लाभार्थ प्रस्तुत है –

सुधार के लिए हुआ मेरा तबादला

सन् 2001 की घटना है, मेरे स्थानान्तरण का आर्डर एक ऐसे ऑफिस के लिए निकला जिसके लिए प्रचलित था कि वहाँ के लोग भ्रष्टाचार से धन कमाते हैं और आधे लोग शराब का व्यसन भी करते हैं। चूँकि वे सभी 20-25 वर्षों से वहीं जमे थे इसलिए निर्भीक भी हो गये थे। मेरा तबादला वहाँ करके वहाँ के एक व्यक्ति को मेरे स्थान पर भेजा जा रहा था ताकि ऑफिस में कुछ सुधार हो। बहुत दिनों तक उस व्यक्ति ने तबादला आदेश नहीं लिया और छुट्टियाँ लेकर उसे टालता रहा। अंततः हमारे विभागाध्यक्ष ने स्पेशल तत्काल रिलीविंग आर्डर जारी किया व उसे फॉलो न करने पर कड़ी कार्यवाही का निर्देश दिया। मजबूरी में उसने वह ऑर्डर लेकर, मेरी जगह ऑफिस में 10 अगस्त को ज्वाइन किया व मैं उसके स्थान पर चला गया।

शुरू किये रहमभाव व शुभभाव

उसकी टेबल मुझे दी गई जिसके लॉकर में उसी व्यक्ति का सामान था व ताला लगा हुआ था। कई दिनों तक फोन करते रहने पर भी वह अपना सामान नहीं ले गया। उसका मानना था कि मेरे कारण ही उसका ट्रांसफर हुआ है। कुछ ने तो यह भी बताया कि वह आपको जान से मारने की फिराक में भी है। यह पता लगते ही मैंने उस व्यक्ति के प्रति रहमभाव व शुभभावना रखना शुरू कर दिया व शिव बाबा से शांति की किरणें लेकर उसे देना शुरू कर दिया। चार-पाँच दिनों के बाद वह ऑफिस में आया तथा हमारे मुख्य अधिकारी को व मुझे गाली देते हुए चाकू द्वारा जान से मारने की धमकी दी। फिर भी मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया व उसके प्रति शुभ भावना रख स्वयं को प्रभु की छत्रछाया में रखने का अभ्यास शुरू कर दिया।

धारदार चाकू निकला

हमारे सेक्शन के इंचार्ज ने 8-10 दिनों बाद कहा कि वह व्यक्ति लॉकर से अपना सामान नहीं ले जा रहा है, तो आप ताला तोड़कर उसका सामान उसके पास पहुँचा दो व लॉकर में अपना सामान व फाइलें रखकर ताला लगा दो। उसकी बात मानकर मैंने जैसे ही दराज खोला तो उसमें अन्य सामानों के साथ एक बड़ा धारदार चाकू भी था। अब उसकी धमकी का रहस्य मेरी समझ में आया। मैं शिव बाबा की याद को और भी बढ़ाकर उसके प्रति शुभ भावना का अभ्यास करने लगा। उसका सामान एक थैले में भरकर अपने ऑफिस के चपरासी द्वारा उसके पास भिजवा दिया। दो-तीन बार वह रास्ते में एक-दो महीने के अंदर दिखा। उसके चेहरे पर हिंसक भाव रहते थे लेकिन मेरे शुभ भाव, आत्मिक भाव को देखकर कुछ बोल नहीं पाता था। शिव बाबा की पूरी मदद मुझे मिल रही थी। फिर छह माह तक वह दिखा ही नहीं। मैं भी धीरे-धीरे उसे भूल गया।

हृदय हुआ स्वच्छ

अचानक एक दिन वह मेरे ऑफिस आया और सबसे हाथ मिलाया, मुझसे भी प्रथम बार हाथ मिलाया (तबादले के बाद, गुस्से में रहने के कारण वह कभी हाथ नहीं मिलाता था) और सामने की कुर्सी पर बैठ गया, बोला, भाई साहब, मैं मरते-मरते बचा हूँ। मैंने पूछा, क्या हुआ? उसने बताया, पिछले चार महीने से मैंने निरन्तर बिस्तर पर रहकर

(शेष..पृष्ठ 31 पर)

कर्मों की परिभाषा

ब्रह्माकुमार हरिपाल सिंह, दिल्ली मेट्रो, दिल्ली

भाग्य से ज्यादा और समय से पहले हमें कुछ नहीं मिल सकता, यह बात सत्य है। इसके साथ एक बात यह भी है कि बिना किये भी कुछ नहीं मिलता। अच्छे पुरुषार्थ का परिणाम (फल) उचित समय आने पर अवश्य अच्छा ही मिलता है और कमजोर पुरुषार्थ का परिणाम भी उचित समय आने पर कमजोर (नकारात्मक) ही मिलता है। कई बार, हम थोड़े अनजान और अधीर हो जाते हैं। इसलिए अक्सर लोग बातों ही बातों में कह देते हैं कि मैं इतना करता हूँ लेकिन मुझे नहीं मिलता या वह इतना गलत करता है तब भी फल-फूल रहा है। अगर लोगों से कहो कि कुछ अच्छा किया करो या यह कह दो कि भगवान को याद किया करो, वही सब दुख दूर करेगा और सुख देगा तो लोग कह देते हैं कि भाई, कर्म ही ईश्वर है, कर्म ही पूजा है, गीता में भी भगवान ने कहा है कि मानव, तू कर्म किये जा और फल की चिंता मत कर। पर क्या हम जानते हैं कि कर्मों की गुह्य गति क्या है?

परमात्मा पिता ने बताया है कि मानव संरचना में दो प्रकार की शक्तियाँ हैं, एक है पंच भौतिक तत्वों से बना शरीर और दूसरी है चेतन सत्ता जिसे हम ज्योति, रूह, आत्मा या स्पिरिट भी कह देते हैं। ये दोनों शक्तियाँ जब आपस में जुड़ जाती हैं तो जीवन बनता है और श्वास लेना, सोचना, बोलना आदि क्रियाएँ प्रारम्भ हो जाती हैं। परमात्मा पिता ने चार प्रकार के कर्मों की समझ हमें दी है –

सत्कर्म – आत्मा, प्रकाश का एक कण है। इसमें सात गुण समाए हैं – ज्ञान, पवित्रता, सुख, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद और शक्ति। ये ही आत्मा के निजी संस्कार हैं। इन गुणों की स्मृति में रहकर और परमात्मा पिता से मन का सम्बन्ध जोड़कर जो कर्म किये जाते हैं वे सत्कर्म कहलाते हैं। 'मैं एक महान आत्मा हूँ', 'मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ', 'मैं इस सृष्टि रंगमंच पर निमित्त मात्र हूँ' इस प्रकार के किसी भी ईश्वरीय स्वमान में रहकर कर्म करने से एक अद्भुत ऊर्जा प्राप्त होती है और श्रेष्ठ कर्म बनते चले जाते हैं। ये स्वमान परिस्थितियों से लड़ने की एवं उन्हें पार करने की अद्भुत शक्ति प्रदान करते हैं। इनसे हमारी रचनात्मक शक्ति बढ़ जाती है।

विकर्म – सामाजिक प्राणी होने के कारण कर्म करते-करते मनुष्य अपनी वास्तविकता को भूलता चला जाता है जिससे उसके ये निजी सातों गुण बदलने लगते हैं। ज्ञान, अज्ञानता में, सुख, दुख में, शान्ति, अशान्ति में, प्रेम, नफरत या गुस्से में, पवित्रता, अपवित्रता में, शक्ति, कमजोरी में और आनंद, नीरस स्वभाव में बदल जाता है जिस कारण मनुष्य के कर्म, विकर्म बनते चले जाते हैं। देहभान में आने से विकर्म होते हैं।

साधारण, व्यर्थ और नकारात्मक कर्म – रोजमर्रा की दिनचर्या में बहुत सारे कर्मों में हम बुद्धि का प्रयोग कम ही करते हैं। ऐसे कर्म हमारी आदतों के रूप में बदल जाते हैं जिन्हें हम सहज ही करते रहते हैं। उनके लिए हमारी विशेष शक्ति खर्च नहीं होती। हम साधारण मानवीय स्मृति में रहकर जो कर्म करते रहते हैं, वे साधारण कर्म कहलाते हैं। साधारण स्मृति की बजाय यदि अर्थहीन बातों का चिंतन चलने लगे तो कर्म भी व्यर्थ कर्म बन जाते हैं। ऐसे कर्मों से आत्मिक शक्ति तेजी से क्षीण होने लगती है। कभी-कभी किसी विकारवश होकर हम व्यर्थ चिंतन की अति में चले जाते हैं जिससे दिमाग की कोशिकाओं में बहुत खिंचाव पैदा होता है और पीयूष ग्रंथि में उत्पन्न स्राव बहुत ही जहरीला हो जाता है, जोकि अनेक अंगों पर कुप्रभाव दिखाता है। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि आत्मा अपना या दूसरे का जीवघात तक कर देती है। ऐसे

कर्म नकारात्मक कर्म कहलाते हैं।

अकर्म – जिन कर्मों का न अच्छा, न बुरा परिणाम निकले वे अकर्म कहलाते हैं। सतयुग, त्रेतायुग में देवताओं के कर्म अकर्म होते हैं। उस समय वे अपनी प्रारब्ध भोग रहे होते हैं।

भगवान ने हमसे एक बहुत ही सुंदर वायदा किया है कि 'सबकुछ भूलकर तुम मुझे याद करो तो मैं तुम्हें तुम्हारे पिछले पापकर्मों से मुक्त कर दूँगा। तुम शोक न करो, मेरी याद में लवलीन हो जाओ और अतीन्द्रिय सुख का आनंद लो।' ये अवस्था ही मनुष्य जीवन का पावन लक्ष्य है। इस लक्ष्य को लेकर चलने वाली आत्मायें मान, अपमान, निंदा, स्तुति में भी समान और स्थिर रहती हैं। उन्हें अचल-अडोल स्थिति सहज ही प्राप्त हो जाती है। नम्रता और मधुरता उनके जीवन की पहचान बन जाती है। उनका जीवन व्यर्थ आकर्षणों से मुक्त होकर आकर्षक और सरल बन जाता है। ऐसी सरलचित्त आत्मायें सबकी प्रिय बन जाती हैं। सफलता सदा उनके साथ-साथ चलती है। उनके बोल वरदानी बन जाते हैं। वे कर्मेन्द्रिय जीत और प्रकृतिजीत बन जाती हैं, प्रकृति भी उनको सहयोग देती है, कष्ट नहीं। ऐसी आत्मायें सदा हल्केपन का अनुभव करते हुए बेफिकर बादशाह बन जाती हैं। उनके सकारात्मक और शक्तिशाली संकल्पों के प्रकम्पन वातावरण को शुद्ध बना देते हैं और अनेक मनुष्य आत्मायें उनसे प्रभावित होकर अपना परिवर्तन सहज ही कर लेती हैं।

अत: हम केवल यह न कहते रहें कि कर्म ही ईश्वर है या कर्म ही पूजा है। कर्मों की सही व्याख्या को भी जानें। साधारण और व्यर्थ कर्म छोड़कर सत्कर्म करें, अनमोल मानव जीवन का सदुपयोग कर इसका आनन्द लें और सर्व को सदा सुख दें। किसी को भी न दुख दें और न ही दुख लें। ❖

अलौकिक जीवन का श्रृंगार
'पवित्रता'

ब्रह्माकुमार राकेश कुमार शर्मा, भरतपुर (राजस्थान)

मेहनत नहीं, सहज है कितना, जन्मों का आधार है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

योगी बनो, पवित्र बनो; शिवबाबा के वरदान हैं।
जीवन में धारण कर; जग को देना सतत् प्रमाण है।।

मस्तक और दृष्टि से इसका हो जाता दीदार है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

ना करनी है कठिन तपस्या; ना हठयोग लगाना है।
निजी वस्तु है, निज गौरव का; लक्ष्य हमें ही पाना है।।

स्मृति-स्वरूप में स्थित हों; यह एक निजी संस्कार है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

बुद्धि का भोजन पावनता; सम्यक्-दृष्टि का वादा है।
श्रेष्ठ कर्म-संकल्प; दैवी जीवन की मर्यादा है।।

'रावण से श्रापित' जीवन का यही एक 'प्रतिकार' है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

वरदाता और वरदानी; दोनों का एक सम्बन्ध है।
'युगलमूर्ति' बनकर रहने का; संगम पर 'अनुबन्ध' है।।

संगमयुगी प्राप्तियों का यह एक सुदृढ़ आधार है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

पावन भारत भूमि हमारी; अपना वतन पवित्र है।
'मैं हूँ परम पवित्र आत्मा' चिन्तन, चाल, चरित्र है।।

इस 'स्वमान' में स्थित रहना एक अलग संस्कार है।
पवित्रता ही श्रेष्ठ अलौकिक जीवन का श्रृंगार है।।

श्रद्धांजलि

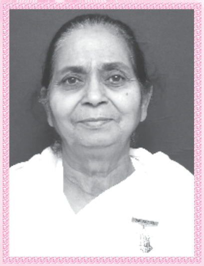

बापदादा की अति स्नेही, ईश्वरीय सेवाधारी ब्रह्माकुमारी संजीवन बहन पंजाब राज्य के मोगा सेवाकेन्द्र पर सेवारत थीं। आप पिछले 51 वर्षों से ईश्वरीय सेवा में समर्पित थीं। आप सर्व की स्नेही और ज्ञानी-योगी आत्मा थीं। आपके शरीर की आयु 70 वर्ष थी। आपने 25 फरवरी, 2017 को प्रात: 5.45 बजे पुराना शरीर छोड़ कर बापदादा की गोद ली। ऐसी स्नेही, त्यागी, तपस्वी, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को सारा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

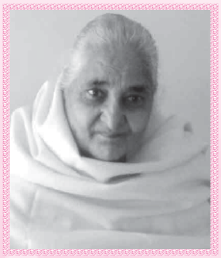

बापदादा की अति स्नेही, ईश्वरीय सेवाधारी ब्रह्माकुमारी कुलवन्त माता को सन् 1961 में जालन्धर में ईश्वरीय ज्ञान का परिचय मिला। लौकिक जिम्मेवारियाँ निभाते हुए आपने प्यारे बाबा की शिक्षाओं को पूरी तरह फालो किया और सन् 1978 में चण्डीगढ़ सेवाकेन्द्र पर पूरी तरह समर्पित होकर आलराउण्ड सेवा का पार्ट बजाया। आपकी एक सुपुत्री ब्रह्माकुमारी हरजीत बहन संगरूर (पंजाब) सेवाकेन्द्र की निमित्त प्रभारी हैं। आपने 22 जनवरी, 2017 को रात 8.30 बजे पुराना शरीर छोड़कर बापदादा की गोद ली। ऐसी स्नेही, त्यागी, तपस्वी, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को सारा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

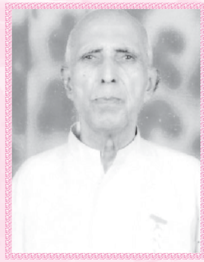

हम सबके स्नेही, साकार मात-पिता के हाथों पले, बापदादा के दिलतख्तनशीन, यज्ञ सेवाओं के आदिरत्न, निरन्तर सेवाधारी, दधीचि ऋषि समान हड्डी-हड्डी विश्वसेवा में स्वाहा करने वाले आदरणीय भ्राता हरिचन्द जी सन् 1962 से ईश्वरीय ज्ञान में चले और सन् 1983 से समर्पित रूप से सेवाएँ दे रहे थे। लौकिक रूप से आप टेलर थे। यज्ञ में आपने ब्रह्मा बाबा के अनेक कुर्ते सिले। आप अनेकों आत्माओं में ज्ञान का बीज बोने और अनेक गीता पाठशालायें खोलने के निमित्त बने जो अब सेवाकेन्द्र बन गए हैं। पिछले 20 वर्षों से सोहना (जिला गुरुग्राम, हरियाणा) में रहकर सेवायें दे रहे थे। आपका स्वास्थ्य कुछ समय से खराब था, खाने की नली में परेशानी थी, भोजन कर नहीं पा रहे थे लेकिन चेहरे से कभी भी निराशा नहीं झलकती थी। कोई भी मिलने आता तो आप हमेशा कहते थे, मैं ठीक हूँ, बाबा चला रहे हैं। जीवन भर सेवा देने वाली आप आत्मा ने अंत में भी बहुत कम सेवा ली। आपने 26 दिसंबर, 2016 को दोपहर 1.30 बजे बापदादा की गोद ली और आगे की सेवाओं पर तत्पर हो गये। आपकी शारीरिक आयु 80 वर्ष थी।

ऐसे स्नेही, अथक सेवाधारी, त्यागी, तपस्वी और इकॉनामी से चलने वाले यज्ञ रक्षक भाई को पूरा दैवी परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

नर सशक्तिकरण

ब्रह्माकुमार बलदेवराज गुप्ता, लुधियाना

आजकल प्राय: नारी सशक्तिकरण पर तो बहुत जोर दिया जा रहा है परन्तु नर की भी कोई जिम्मेवारी बनती है, इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है जबकि आज नारी से भी अधिक सशक्तिकरण की आवश्यकता नर की है। यदि नर शक्तिशाली बन जाए तो नारी सुरक्षित हो ही जाएगी। नारी शब्द का अर्थ ही है न + अरि अर्थात् जिसका कोई दुश्मन नहीं तथा न ही वह किसी की दुश्मन है। फिर भी आजकल ऐसा लगता है कि नारी असुरक्षित है। तभी ही नारी सशक्तिकरण की जरूरत महसूस हो रही है।

नारी का दुश्मन कौन?

प्रश्न उठता है कि नारी का दुश्मन कौन है जिससे नारी भयभीत है, जिससे नारी सुरक्षा चाहती है। अनेकानेक योनियों में से कौन-सी ऐसी योनि है जिससे नारी को डर लगता है? निश्चय ही इस प्रश्न का उत्तर यही होगा कि नर ही ऐसी योनि है जिससे नारी भयभीत है। इससे ही वह सुरक्षा चाहती है। आखिर नर भी नारी का दुश्मन क्यों है? क्या कारण है कि नारी, नर से सुरक्षा चाहती है? इसका कारण नारी की कमजोरी नहीं बल्कि नर की ही कमजोरी है। चाहे इसे नर की कमजोरी कहें या नर का दोष कहें, बात एक ही है। जब पुरुष वासना के अधीन हो जाता है और वासना को कन्ट्रोल (नियंत्रित) करने की शक्ति उसमें नहीं रहती तो वह नारी पर हमलावर हो जाता है और नारी की इज्जत खतरे में पड़ जाती है। इसमें नारी का कोई दोष नहीं। यदि नर में ऐसी शक्ति आ जाए कि वह अपनी वासना को रोक ले और नारी पर हमलावर न हो और नारी को पुरुष की ओर से अभयदान मिल जाए तो नारी सुरक्षित है ही है। अत: नर का सशक्तिकरण होना चाहिए कि वह विकृत भावनाओं के वश होकर अमानुष न बने।

नारी शक्ति है

इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी सीता ने कभी किसी रावण का अपहरण नहीं किया है, न ही किसी द्रौपदी ने किसी दुर्योधन को नग्न किया है, न ही किसी पद्मिनी ने किसी अलाऊद्दीन पर मोहित होकर उसे पाने के लिए उस पर हमला किया है तथा न ही कोई संयोगिता किसी पृथ्वीराज पर मोहित हुई है क्योंकि नारी ने अपनी वासना को सदा नियन्त्रित किया है। नारी का तो रूप ही है माँ, बेटी, बहन व पत्नी का। नारी के पतिव्रत धर्म का तो शास्त्रों में भी गायन है। जहाँ भी ऐसी दुर्घटनाएँ हुई हैं वहाँ नर ही पिशाच बना है और नारी का शोषण हुआ है। यदि उस समय भी नर शक्तिशाली होता तो ऐसी घटनाएँ न होतीं और भारत शायद गुलाम भी न होता।

नारी नर्क का द्वार नहीं

यदि हम शंकराचार्य को ही लें, जिसने नारी को नर्क का द्वार कह दिया, इसमें भी नारी का कोई दोष नहीं, इसमें भी शंकराचार्य की ही कमजोरी है। नारा तो उसने लगाया कि 'एको ब्रह्मद्वितियो नास्ति' लेकिन नारी के मामले में वह हार खा गया। बाकी सारा जगत – पशु, पंछी, पेड़, पौधे, नदी, नाले उसे ब्रह्म का रूप नजर आए लेकिन नारी नर्क का द्वार नजर आई। या तो वह यह कह देता कि 'एको ब्रह्म द्वितियोनारी' तो भी ठीक था लेकिन अपनी ही कमजोरी के कारण शंकराचार्य ने नारी के ऊपर इतना बड़ा कलंक लगा दिया। यदि शंकराचार्य के अन्दर भी इतनी शक्ति आ जाती कि वह नारी में भी ब्रह्म ही देख पाता तो शायद वह नारी को नर्क का द्वार घोषित न करता। कभी किसी नारी ने नर को नर्क का द्वार नहीं कहा। तो सशक्तिकरण किसका होना चाहिए? शंकराचार्य जैसी विचारधारा रखने वालों का ही होना चाहिए। इससे नारी का अबलापन अपने आप समाप्त हो जाएगा।

नारी वेश्या नहीं

यदि हम वेश्याओं के मामले को लें तो इसमें भी नारी का कोई दोष नहीं क्योंकि फिर वही प्रश्न उठता है कि वेश्याओं के पास जाता कौन है? तो उत्तर यही होगा कि जो नर वासना के अधीन होते हैं और वासना को नियन्त्रित नहीं कर पाते, वे वेश्याओं के पास जाते हैं। धन भी खर्च करते हैं और शारीरिक शक्ति का भी नुकसान करते हैं तथा किसी परिचित व्यक्ति को पता चल जाए तो इज्जत भी चली जाती है। यदि पुरुष स्वयं को संभाल ले तो खुद भी इज्जतदार बन जाएगा और वेश्यावृत्ति को भी प्रोत्साहन न मिलने के कारण वह भी समाप्त हो जाएगी। दोषी नर ही है जो बिना किसी निमन्त्रण के वेश्याओं के पास जाता है और अपना सर्वनाश करता है। कहा जाता है कि यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, यदि चरित्र गया तो सब कुछ गया लेकिन यदि तीनों ही चीजें चली जाएँ तो क्या हाल होगा, यह सोचना भी नर की ही जिम्मेवारी है। यदि यह कह दें कि वेश्या नर है, नारी नहीं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

नर तथा नारी कैसे हों?

यादगार शास्त्र रामायण में एक तरफ तो राम और लक्ष्मण की मिसाल है जिनके पास शूर्पनखा आई तथा उनके आगे शादी का प्रस्ताव रखा लेकिन दोनों अपने धर्म पर अटल रहे जिससे शूर्पनखा को लज्जित होना पड़ा और दूसरी तरफ रावण की मिसाल है जो सीता को जबरदस्ती ले गया और उसे पटरानी बनाने की कोशिश की लेकिन सीता के पतिव्रत धर्म की शक्ति के कारण उसे हाथ तक नहीं लगा सका। यदि आजकल के नर भी राम और लक्ष्मण जैसे बन जाएँ कि यदि कोई शूर्पनखा उनके पास आए तो भी वे अपने धर्म पर अटल रहें तो नारी सुरक्षित हो ही जाएगी। नर रावण जैसा न बने जिसने सीता को चुराया, अपने कुल का विनाश करवा लिया और नारी सीता जैसी बने जिससे कि उसका धर्म ही उसकी रक्षा करे और रावण उसे हाथ तक न लगा सके। कोई नारी शूर्पनखा जैसी न बने।

नारी असुर संहारनी है

शास्त्रों में भी यही वर्णन है कि जब भी कोई राक्षस, देवताओं को तंग करता था तो कोई न कोई नारी शक्ति ही उसका अन्त करती थी। मंदिरों में भी जितना आजकल देवियों का गायन है उतना देवों का नहीं जैसे विद्या की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी, शक्ति की देवी दुर्गा व काली। नारी तो है ही शक्ति का रूप, उसके सशक्तिकरण के साथ-साथ नर का भी सशक्तिकरण हो।

हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है। जरूरत है कि प्रधान वर्ग शक्तिशाली हो जाए और गौण वर्ग की रक्षा के लिए तत्पर हो जाए क्योंकि हर रिश्ते में नारी की रक्षा की जिम्मेवारी पुरुष पर ही आती है। अत: जहाँ नारी सशक्तिकरण की लहर चल रही है वहाँ नर का भी आध्यात्मिक सशक्तिकरण अत्यावश्यक है। ❖

शुभ भावनाओं....पृष्ठ 24 का शेष..

अस्पताल व घर में विभिन्न बीमारियों का कष्ट सहन किया है। मेरे दो जवान बेटे हैं लेकिन दोनों ने साथ नहीं दिया। मेरी बीमार पत्नी ने व भगवान ने साथ दिया इसलिए मैं आपके सामने जीवित हूँ। मेरा हृदय बीमारी व दुनिया वालों की बेवफाई से एकदम स्वच्छ हो गया है। मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ कि आपके बारे में मैं गलत भावना, हिंसक भावना रखता था। मैंने कहा, मेरे मन में आपके प्रति शुरू से ही गलत भाव नहीं था, न आज है। आप तो मेरे वरिष्ठ भाई हैं। मेरे लायक कोई सेवा हो तो जरूर बताइये। वह हाथ जोड़कर शांत भाव से, कृतज्ञ भाव से वापस चला गया तथा कुछ दिनों बाद शारीरिक कमजोरी के कारण स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर गाँव चला गया। फिर मुझे नहीं दिखा। उसके गाँव के एक व्यक्ति ने कुछ माह बाद बताया कि वे गाँव में खेती-बाड़ी करवाते हैं व स्वस्थ हैं, खुश रहते हैं, अब उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं है। इस प्रकार शुभ भावनाओं के प्रभाव से व परमात्मा पिता की मदद से अनहोनी घटना टल गई। ❖

आवश्यक सूचना
(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. नये वर्ष 2017-18 में 'ज्ञानामृत' तथा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 100 रुपये तथा विदेशों में वार्षिक शुल्क 1,000 रुपये ही रहेगा। आजीवन शुल्क भारत में 2,000 रुपये तथा विदेश में 10,000 रुपये रहेगा।
2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'ज्ञानामृत' या 'The World Renewal' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।
3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच **P.B.K.I.V.V.शान्तिवन** में है।
4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल 'ज्ञानामृत, शान्तिवन' या 'The World Renewal, Shantivan' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।
5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

    बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
    बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन
    सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367
    सेविंग बैंक एकाउंट का नाम: World Renewal Gyanamrit
    IFS Code : SBIN0010638

    ऑनलाइन भुगतान करने के बाद नीचे लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपोजिट केवल NEFT/ONLINE के द्वारा ही करें।
6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।
7. नकद राशि जमा कराने की बजाय खाते से ट्रांसफर करें। यज्ञ के बैंक एकाउंट से ट्रांसफर नहीं करें।

संपर्क के लिए

ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।

फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116

मोबाइल : 09414006904, 09414423949

E-mail: omshantipress@gmail.com, hindigyanamrit@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125